॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

रत्नत्रय विधान

प्रेरणा

कविहृदय – सिध्दांतज्ञ

श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज

संकलन

मुनि श्री विज्ञसागरजी महाराज (बा. ब्र. रविन्द्र भैया 'शास्त्री')

कृति

रत्नत्रय विधान

शुभाशीष

संत शिरोमणि जैनाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरणा

श्रमणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महाराज

सहयोग

मुनि श्री विधेयसागर जी महाराज

•

संकलन एवं संशोधन

मुनि श्री विज्ञसागर जी महाराज (प्रतिष्ठाचार्य बा. ब्र. रविन्द्र भैया 'शास्त्री')

•

संपादन

श्रमणी आर्यिका विमलश्री (M.A. संस्कृत)

श्रमणी आर्यिका विनेहश्री (M.A. संस्कृत)

प्राप्ति स्थान –

श्री देवेन्द्र कुमार जैन
बड़ी बजरिया, बीना
☎07580–223344

श्री विराग विद्यापीठ
कीर्ति स्तंभ
भिण्ड

द्वितीयवृत्ति – 2200 बाँसवाड़ा ज्ञानदान राशि 20/– रु. मात्र (पुनः मुद्रण हेतु)

मुकेश जैन 9214931295

मुद्रक

आर्यन् एजेन्सीज्

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

सर्वाधिकार सुरक्षित
C

इसे जरुर पढ़ें

विधि के विधान को बदलने का उपक्रम धार्मिक अनुष्ठान ही होता है उस अनुष्ठान को विधिपूर्वक करने की प्रक्रिया को ही शास्त्रों में महर्षियों ने विधान कहा है। विधान में समय और त्याग का विशेष महत्व है, जिस विधान में समय ज्यादा लगता है और त्याग भी अधिक होता है उसमें हमारा उपयोग अधिक समाहित होने के कारण वह विधान अधिक अन्य कम समय वाले विधानों से अधिक महत्वशाली हो जाता है। यद्यपि सभी विधान अपने आप में अलग–अलग महत्व वाले हैं लेकिन सभी अनुष्ठानों में एक सम्यग्दृष्टि जीव का लक्ष्य वीतरागता को पाना ही है।

वीतरागता की आराधना में सुख शांति की आराधना, ज्ञान–दर्शन की आराधना, अरहंत सिद्ध की आराधना सभी शामिल हैं। हमारा लक्ष्य हमें हरदम स्मरण रहे यदि हम सांसारिक आकांक्षाओं का लक्ष्य बनाकर विधान पूजनादि करते हैं तो आकांक्षा की पूर्ति तो हो जाएगी लेकिन उस आराधना का जो वास्तविक महान फल मिलना था वह नहीं मिल सकेगा अतः वीरागता को ध्यान में रखकर विधान का अनुष्ठान करना सर्वश्रेष्ठ है।

इस पुस्तक में श्री रत्नत्रय विधान मुनि श्री विज्ञ सागर जी महाराज (बा. ब्र. रविन्द्रभैया) द्वारा संकलित करके समुचित विधि से प्रस्तुत किया गया है जो प्रशंसनीय है विधान के संपादन में बहिन साधना व संगीता द्वारा जो परिश्रम किया गया वह भी सराहनीय है। हमारा सभी के लिए कल्याण हेतु शुभाशीर्वाद है।

श्रमणाचार्य विनम्रसागर

मंगलाष्टक स्तोत्र

अरहन्तो भगवंत इन्द्र – महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त – सुपाठकाः मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र – सुरासुरेन्द्र – मुकुट – प्रद्योत – रत्नप्रभा –
भास्वत्पाद – नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध – सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन – बोध – वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति–श्री–नगराधिनाथ–जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा व चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।2।।

नाभेयादि–जिनाधिपास्त्रि–भुवनख्याताश्चतुर्विन्शतिस्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रति विष्णु–लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रि षष्टि पुरुषाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकर मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्षस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाधिपास्थितिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।4।।

ये सर्वौषधि ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग–महानिमित्त–कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।
पंचज्ञानधारास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर – भावनामरगृहे मेरौ – कुलाद्रौस्तथा,
जम्बू–शाल्मलि–चैत्यशाखिषु तथा, वक्षार–रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर प्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्त नो मंगलम्।।8।।

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य–संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषात्।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च, सुजनै–धर्मार्थ–कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।।इति मंगलाष्टकम्।।

जल शुद्धि मंत्र

जल शुद्धि – ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्म महापद्म तिगिंञ्छ केसरि पुण्डरीक–महापुण्डरीक गंगासिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीतासीतोदा नारीनरकान्ता सुवर्णरूप्यकूला रक्तारक्तोदा क्षीरोम्भोनिधि शुद्धजलं सुवर्णघट प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रं झ्रं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।
(पीले सारसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

सकलीकरण

शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि
(सभी पात्र दाहिनी चुल्लू में जल लेकर मन्त्रित जल से स्वयं की शुद्धि करें।)

हस्त प्रक्षालन मंत्र

ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा हस्तप्रक्षालनं करोमि

अमृतस्नान मंत्र

मनः प्रसत्यै वचसः प्रसत्यै कायः प्रसत्यै च कषाय हानिः।
सैवार्थतः स्यात्सकलीक्रियान्या मन्त्रैरुदारैः कृतिकल्पनांगा।।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः ह्रीं स्वाहा।
(इस मन्त्र से जल को मन्त्रित कर शरीर पर छिटककर शुद्धि करें)

सकलीकरण

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः (अंगूठा शुद्ध करें)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (तर्जनी अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः (मध्यमा अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठकाभ्यां नमः (कनिष्ठा अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः (दोनों हथेली सीधी फैलाकर नमन करें)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हथेली उल्टी फैलाकर नमन करें)
ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा (सिर का स्पर्श करें)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा (मुँह का स्पर्श करें)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा (हृदय का स्पर्श करें)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभि रक्ष रक्ष स्वाहा (नाभि का स्पर्श करें)
ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा (पैरों का स्पर्श करें)
ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा (शरीर पर पुष्प छोड़ें)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा (वस्त्रों पर पुष्प छोड़ें)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा (पूजा सामग्री के पास पुष्प छोड़ें)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा (पूजा स्थल पर पुष्प छोड़े)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत रक्ष रक्ष स्वाहा (सब यजमानों पर पुष्प क्षेपण करें)

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृतचञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकारहेतोः।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांगशुद्धिं कुरु कुरु।

यह मन्त्र पढ़कर (1) मस्तक (2) शिखा, (3) ग्रीवा (4) कान (5) हृदय (6) दोनों भुजाएँ, (7) कलाई (8) नाभि और (9) पीठ में नौ जगह तिलक लगावें।

रक्षा सूत्र वंधन मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु।
ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा बंधन करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

यज्ञार्थमेवं सृजतादिचक्रेश्वरेण चिह्नं विधिभूषणानाम्।
यज्ञोपवीतं विततं हि रत्नत्रयस्य मार्गं विदधाम्यतोऽहम्।।

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

बिना यज्ञोपवीत के भगवान की पूजन करना निषेद है।
(यज्ञोपवीत धारण करें)

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्व दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

रक्षा मन्त्र

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं–किरिटिं घातय – घातय पर विघ्नान् स्फोटय – स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु–कुरु पर मुद्रां छिन्द – छिन्द, पर मन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षः वाः वाः हूं फट् स्वाहा। (स्वयं के ऊपर पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं नमः स्वाहा

शान्ति मन्त्र

(सात वार पढ़कर सभी पात्रों पर पीली सरसों पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष – कल्मषाय दिव्य – तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व–रोगापमृत्यु– विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम डामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु – कुरु वषट् स्वाहा

(विश्वशान्ति की कामना के साथ सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें।)

जल शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म – तिगिञ्छकेसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारीनरकान्ता सुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः क्षीराम्भोधिजलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नव–रत्नगन्ध पुष्पाक्षतादिबीजपूरितं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं स्वाहा (जलाभिमन्त्रणम्)

ॐ ह्रीं इन्द्रोचिताभूषणानि अवधारयामि।

(हार–मुकुट, यज्ञोपवीत आदि धारण करें।)

इन्द्र प्रतिष्ठा

नोट – यदि पात्रों का सकलीकरण न हुआ हो तो पहले सकलीकरण करके फिर इन्द्र प्रतिष्ठा करें।

भक्ति– (1) सिद्धभक्ति (2) शांतिभक्ति

प्रमुख इन्द्र इन्द्राणी हेतु सावधानियाँ

1. मानसिक विकृति न हो ।
2. स्वस्थ एवं निरोग हो, अतिवृद्ध न हो।
3. देव, शास्त्र एवं गुरु के प्रति समर्पण और इनकी पूर्ण विनय करना।
4. नित्य देव दर्शन का नियम तथा श्रावकोचित क्रियाओं का ज्ञान हो।

5. श्वेत दाग आदि चर्मरोग न हों। सर्वांग सुन्दर हो अर्थात् हीनाधिक अंग न हो।
6. समाज द्वारा मान्य हो, बहिष्कृत न हो।
7. विधुर न हों।
8. पाँच माह से ज्यादा का गर्भ न हो।
9. अत्यन्त छोटा अर्थात् दूध पीता बच्चा न हो।
10. ऋतु काल के पाँचवें दिन अथवा छटवें ही पूजन में सम्मिलित हों।

यदि शारीरिक विकृति या श्वेत दाग (जिनसे स्राव न होता हो) आदि हों तो इन्द्र न बनकर सामान्य रूप से पूजा में संलग्न हो सकते हैं। विधवा महिलाएँ भी पूजा कर सकती है। वह मांगलिक क्रियायें सम्पन्न नहीं करेंगी।

(सिद्धभक्ति पूर्वक कार्य आरंभ करें)

अमृतस्नान मन्त्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(शरीर पर मन्त्रित जल के छींटे लगाकर शुद्धि करें)

धृत्वाग्रतो मंगलयन्त्रधाम्नि प्रसाधनान्यार्हतयज्ञपीठे।
अनादिसिद्धादभिमन्त्रपूता–न्यंगेषु धार्याणि यथाप्रसादम् ।।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं इन्द्र–इन्द्राण्योराभूषणानि पवित्राणि कुरु कुरु। (जल से मुकुट माला आदि शुद्ध करें)

दृग्बोधदेशव्रतरूपरत्नत्रयं भवेन्मेकलितैकभक्तम्।
आकर्मिका–ब्रह्मनिवृत्तियुक्तं स्याद्यज्ञदीक्षाविधिना विशिष्टम् ।। प्र.ति.16/55
ॐ ह्रीं अर्हद्देवयज्ञदीक्षांगीकारः। (सब पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

यजमान एवं इन्द्र संस्कार

देशजातिकुलाचारैः श्रेष्ठो दक्षः सुलक्षणः ।
त्यागी वाग्मी शुचिः शुद्धसम्यक्त्वः सद्व्रतो युवा ।।1।।
श्रावकाध्ययनज्योति – र्वास्तुसारपुराणवित्।
निश्चयव्यवहारज्ञः प्रतिष्ठाविधिवित्प्रभुः ।।2।।
विनीतः सुभगो मन्दकषायो विजितेन्द्रियः ।
जिनेज्यादिक्रियानिष्ठो भूरिसत्वार्थबान्धवः ।।3।।
दृष्टसृष्टक्रियो वार्तः सम्पूर्णांगः परार्थकृत ।
वर्णी गृही वा सद्वृत्तिरशुद्रो याजको द्युराट् ।।4।।
गुणिनोप्यगुणे व्यर्था गुणवत्यगुणा अपि ।
याजकेन्ये कृतार्थाः स्युस्तन्मृग्योऽसौ स्फूरदगुणः ।।5।।

आयुष्मंस्त्वयि वर्तन्ते प्रोक्ता याजकसद्गुणाः ।
जिनाग्रयाजकतया सौधर्मेन्द्रोऽसि सोऽधुना ॥6॥
इत्युच्चैर्वदता दत्तान्समन्त्रान् गुरुणाक्षतान्।
स्वीकृत्यांजलिनोंपांशुमन्त्रमुच्चार्य नामिते ॥7॥ (प्र.ति.अ.)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरिहंताणं अनाहत–पराक्रमस्ते इन्द्रो भवतु भवतु ह्रीं नमः स्वाहा । (पुष्प क्षेपण करें)

शची संस्कार

सौभाग्यामलचारुभूषणचरित्रालंकृतां पावनीम् ।
कल्पद्रासवभामिनीं व्रतगुणैः शीलैर्महाशोभनाम् ॥
अन्यां वा कृतिकर्मसंग्रहकरीं योग्यामुदीक्ष्य ध्रुवम् ।
संदीक्षाव्रतशुद्धये वितनुतामाचार्यवर्यः स्वयम् ॥
अस्मिन् कर्मणि मात्रुपासनविधावेषा प्रशस्ता भव ।
त्वेवं सभ्यजनाः प्रमाणयत सद्धर्मत्वबुद्धयेतिताम् ॥
मांगल्यादिविभूषणैः कृतमहोत्सवामिमा* रक्षय।
मन्त्रोपास्तितया नियोज्य कुसुमक्षेपं विदध्योत्सवे

इति शचीदेवी प्रतिज्ञानाय पुष्पाञ्जलिः। (पुष्प क्षेपण करें)

धौतान्तरीयं विधुकान्तिसूत्रैः सद्ग्रन्थितं धौतनवीनशुद्धम्।
नग्नत्वलब्धिर्न भवेच्च यावत् सन्धार्यते भूषणमूरुभूम्याः ॥

ॐ अधोवस्त्रं अवधारयामि। (धोती का स्पर्श करें)

संव्यानमञ्चद्दशया विभान्तमखण्डधौताभिनवं मृदुत्वम् ।
सन्धार्यते पीतसितांशुवर्ण–मंशोपरिष्टाद् धृतभूषणांकम् ॥

ॐ दुकूलं अवधारयामि। (दुपट्टा का स्पर्श करें)

जिनांघ्रिभूमिस्फुरितां स्रजं मे स्वयंवरं यज्ञविधानपत्नी ।
करोतु यत्नादचलत्वहेतो–रितीव मालामुररीकरोमि ॥

ॐ रत्नामालां अवधारयामि। (माला धारण करें)

शीर्षण्यशुम्भन्मुकुटं त्रिलोकी–हर्षाप्तराज्यस्य च पट्टबन्धम् ।
दधामि पापोर्मिकुलप्रहन्तृ–रत्नाढ्यमालाभिरु–दञ्चितांगम् ॥

ॐ मुकुटं अवधारयामि। (मुकुट धारण करें)

मुक्तावलीगोस्तनचन्द्रमाला–विभूषणान्युत्तमनाकभाजाम् ।
यथार्हसंसर्गगतानि यज्ञलक्ष्मीसमालिंगनकृद्–दधेऽहम् ॥

ॐ हारं अवधारयामि। (हार धारण करें)

*कृतमहोत्सवामिता – पठान्तर

प्रोत्फुल्लनीलकुलिशोत्पलपद्मराग–निर्जत्करप्रकरबन्धसुरेन्द्रचापम्।
जैनेन्द्रयज्ञसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले रत्नांगुलीयकमहं विनिवेशयामि ।।

ॐ रत्नमुद्रिकां अवधारयामि। (मुद्रिका धारण करें)

ग्रैवेयकं मौक्तिकदामधाम–विराजितं स्वर्णनिबद्धयुक्तम्।
दधेऽध्वरापर्णविसर्पणेच्छु–र्महाधनाभोगनिरूपणांकम् ।।

ॐ कण्ठाभरणं अवधारयामि। (कण्ठाभरण धारण करें)

एकत्र भास्वानपरत्र सोमः सेवां विधातुं जिनपस्य भक्त्या।
रूपं परावृत्य च कुण्डलस्य मिषादवाप्ते इव कुण्डले द्वे ।।

ॐ कुण्डलद्वयं अवधारयामि। (कुण्डल धारण करें)

भुजासु केयूरमपास्तदुष्ट–वीर्यस्य सम्यक् जयकृत्ध्वजांकम् ।
दधे निधीनां नवकैश्च रत्नै–र्विमण्डितं सद्ग्रथितं सुवर्णैः ।।

ॐकेयूरं अवधारयामि। (बाजूबन्द धारण करें)

अन्यैश्च दीक्षां यजनस्य गाढं कुर्वद्भिरिष्टैः कटिसूत्रमुख्यैः।
सम्भूषणैर्भूषयतां शरीरं जिनेन्द्रपूजा सुखदा घटेत ।।

ॐ कटिमेखलां अवधारयामि। (कटिसूत्र धारण करें)

विधेर्विधातुर्यजनोत्सवेऽहं गेहादिमूर्च्छामपनोदयामि।
अनन्यचेताः कृतिमादधामि स्वर्गादिलक्ष्मीमपि हापयामि ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधु–समक्षकं दृढव्रतं समारूढं भवतु स्वाहा।
इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण–सकलकर्मक्षयार्थं पञ्चमहागुरुभक्ति–कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यह पढ़कर घर–गृहस्थी के कार्यों से उत्सवपर्यन्त निर्वृत रहने की प्रतिज्ञा करें)

मण्डप प्रतिष्ठा

(मंगलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्र एवं भक्तियाँ पढ़कर कार्य आरम्भ करें)

क्षेत्रआज्ञा एवं भूमि शुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जिनगर्भग्रह क्षेत्रे धरित्री जाग्रतावस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।

मण्डप शुद्धि

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धि कुर्मः
(इस मंत्र से जल मन्त्रित कर चारों और छिड़क देवें)

भूमि शुद्धि

ओं शोधयामि भूभागं जिनधार्माभिरुत्सवे।
काल धौतोज्ज्वल स्थूल कलशापूर्ण वारिणी।।

ओं ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्म तीर्थनाथाय श्री शांतिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(डाभ के पूले से निम्न प्रकार मंत्र पढ़कर भूमि शोधन करें)

ॐ ह्रीं वात कुमाराय सर्व विघ्न विनाशाय महीं पूतां कुरु – कुरु हूं फट् स्वाहा।

(इस के पश्चात् डाभ के पूले को जल में भिगोकर निम्न श्लोक मंत्र पढ़ते हुए भूमि पर जल सिंचन करें)

ये संति केचिदिह दिव्य कुल प्रसूता, नागाः प्रभूत बल दर्प युता विबोधाः।
संरक्षणार्थ–ममृतेन शुभेन तेषां प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ॐ ह्रीं अर्हं मेघ कुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय स्वाहा यं क्षः फट् स्वाहा।)

इन्द्रवेद्यपि हस्तानां विज्ञेयाष्टोत्तर शतम्।
शतेन्द्रो (विधान का नाम) कुरुते स्वयम्।
साष्टारत्निशतेन्द्रिवेदिरुचिरं शक्रः कुबेरेण यं।
ज्यायांसंमणिमण्डपं विरचयत्यर्हत्प्रतिष्ठाकृते।
अन्तर्निर्मितदिव्य वेदिविलसल्लक्ष्मीकटाक्षोद्भटः।
सोयं मंगलमण्डपो विजयते जैनप्रतिष्ठोत्सवे।।

ॐ ह्रीं अर्हं .... मण्डल विधाने मण्डपशुद्ध्यर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(विधान का नाम लें) (मण्डल एवं मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

चतुर्णिकायामरसंघ एष आगत्य यज्ञे विधिना नियोगम्।
स्वीकृत भक्त्या हि यथार्हवंशे सुस्था भवन्त्वाह्निककल्पनायाम्

चतुर्णिकायदेवाः स्वस्थानेतिष्ठत–तिष्ठत विघ्नं निवारयत निवारयत प्रतिष्ठा कार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत।(मण्डल एवं मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

आयात मारुतसुराः पवनोद्भटाशाः संघट्टसंलसितनिर्मलतन्तरीक्षाः।
वात्यादिदोषपरिभूतवसुन्धरायां प्रत्यूहकर्म निखिलं परिमार्जयन्तु।।

भो वायुकुमारदेवगणाः प्रतिष्ठास्थले तिष्ठत तिष्ठत विघ्नं निवारयत निवारयत प्रतिष्ठा कार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत (मण्डल की हवा करें, मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

आयात वास्तुविधिषूद्भटसंनिवेशा योग्यांभागपरिपुष्टवपुः प्रदेशाः।
अस्मिन् मखे रुचिरसुस्थितभूषणांकेसुस्था यथार्हविधिना जिनभक्तिभाजः ।

भो वास्तुकुमारदेवगणः जिनेन्द्रभक्त्यर्थं स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत सहयोगं कुरुत कुरुत (मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

आयात निर्मलनभः कृतसंनिवेशाः मेघासुराः प्रमदभारनमच्छिरस्काः।
अस्मिन् मखे विकृतविक्रियया नितान्ते सुस्था भवन्तु जिनभक्तिमुदाहरन्तु।।

भो मेघकुमारदेवगणाः ......(विधान का नाम) मण्डल विधानोत्सवे मेघकृतविघ्न–निवारणार्थं स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत सहयोगं कुरुत कुरुत (पश्चिम दिशा में जल के छींटे लगावें, मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

आयात पावकसुराः सुरराजपूज्यसंस्थापनाविधिषु संस्कृतविक्रियार्हाः।
स्थाने यथोचितकृते परिवद्धकक्षाः सन्तु श्रियं लभतु पुण्यसमाजभाजाम्।।

भो अग्निकुमारदेवगणाः अस्मिन् .... (विधान का नाम) मण्डलविधानोत्सवे अग्निकृतविघ्न – निवारणार्थं स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत प्रतिष्ठाकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत।
(अग्निकोण में थोड़ा कपूर चलावें एवं मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

नागाः समाविशत भूतलसंनिवेशाः स्वां भक्तिमुल्लसितगात्रतया प्रकाश्य।
आशीविषादिकृतविघ्नविनाशहेतोः सुस्था भवन्तु निजयोग्यमहासनेषु।।

भो जिनभक्तितत्परनागकुमारदेवगणाः यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत सर्व विघ्ननिवारणार्थं मण्डल विधानोत्सवे सहयोगं कुरुत कुरुत मण्डपोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।
(मण्डप पर पुष्प क्षेपण करें)

पुरुहूतदिशि स्थितिमेहि करोद्धृतकाञ्चनदण्डगखण्डरुचे।
विधिना कुमेदेश्वरसव्यशये धृतपंकजशंकितकंकणके।।

भो कुमुदप्रतीहारनिजपूर्वद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्वविघ्ननिवारणं कुरु कुरु
(पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

वामनाशु यमदिग्विभागतः स्थानमेहिजिनयज्ञकर्मणि।
भक्तिभारकृतदुष्टनिग्रहः पूतशासनकृतामबन्धकः।।

भो वामनप्रतीहारनिजदक्षिणद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्व विघ्ननिवारणं कुरु कुरु
(दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

पश्चिमासु विततासु हरित्सु भूरिभक्तिभरभूकृतपीठाः।
अञ्जनस्वहितकाम्ययाऽध्वरे तिष्ठ विघ्नविलयं प्रणिधेहि।।

भो अञ्जनप्रतीहारनिजपश्चिमद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्वविघ्न निवारणं कुरु कुरु
(पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

पुष्पदन्तभवनासुरमध्ये सत्कृतोऽसि यत इत्थमवोचम्।
उत्तरत्रमणिदण्डकराग्रस्तिष्ठ विघ्नविनिवृत्तिविधायी।।

भो पुष्पदन्तप्रतीहारनिज उत्तरद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्व विघ्ननिवारणं कुरु कुरु
(उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

करकृतकुसुमानामञ्जलिं संवितीर्य धनदमणिसुरत्नाधीशपूजार्थसार्थे।
विकिरविकिरशीघ्रं भक्तिमुद्भाव्यनूनं निगदतु परमाके मण्डपोर्ध्वावकाशे।।

इत्युक्त्वा मण्डपोपरि सर्ववर्णांचितपुष्पाक्षताः क्षेप्याः
(मण्डप के ऊपर रजत पुष्प सहित अक्षत बरसावें)

पञ्चसूत्रं समादाय याजको वेष्टयेत्तदा।
मण्डपं सुन्दरं कृत्वावादित्रकलशब्दकैः।।

ॐ ह्रीं परमात्मब्रह्मणे नमो नमः, ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः, ॐ ह्रीं चतुर्मंगलाय नमो नमः, ॐ ह्रीं चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः, ॐ ह्रीं चतुःशरणाय नमो नमः, इति सर्वेषां यजमानानां सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। (मण्डप को तीन बार पञ्चवर्णी सूत्र से वेष्टित करें)

मण्डप पर ध्वजारोहण

तस्तंदण्डमुद्धृत्य मण्डपं परितः श्रिया।
महत्या भ्रमयित्वा त्रिः सुलग्ने मन्त्रमुच्चरन्।

ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा
(मण्डप पर ध्वजा लगावें)

स जयतु जिनधर्मो यावद्चन्द्रतारम् व्रतनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः।
अहरहरभिवृद्धिं यान्तु चैत्यालयास्ते तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु।।

इति पठित्वा विश्वकल्याणार्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्
(सब दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

मंगल कलश स्थापन

मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे न पूंगादि फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

चारों कोनों पर चार कलश स्थापन करें।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमानेकर्मणि .... श्रीवीरनिर्वाण संवत्सरे .... मासे .... पक्षे . ... तिथौ ..... वासरेप्रशस्तलग्ने .... कार्यस्यनिर्विघ्न समाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत – श्रीफलादि – शोभितं – मंगलकलश – स्थापनम् करोमि। श्रीं इवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मुख्य दिशानुसार ईशान कोण में मंगल कलश स्थापित करें)

मंगल कलश के ऊपर श्री फल रखने का मंत्र –

ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना –

ओं श्रीमत् परमेश्वरोपदिष्ट शिष्टेष्ट दयामूलधर्म प्रभावक यष्ट याजक प्रभृति भव्य जनानां सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु। श्री मज्जिनशासने भगवतो महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे श्री मूलसंघे कुन्द कुन्दाम्नाये मध्यलोके जम्बूद्वीपे सुदर्शन मैरो दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... नगरे विविधालंकार मंडित यज्ञ मण्डपे हुण्डावसर्पिणी काले दुःखं नाम्नि पंचम कालयुगे प्रवर्त्तमाने वीर निर्वाण.... संवत्सरे मासोत्तम मासे...... पक्षे.... तिथौ... वासरे जिन प्रतिमायाः सन्निधौ दिगम्बर जैनाचार्य आदि महावीर विमल सन्मति विराग सागर परम्परायां मुनि, आर्यिका श्रावक श्राविकादि चतुर्विध संघ सन्निद्यौ। विधान निर्विघ्न समाप्त्यर्थं क्रिया शुद्धयर्थं शान्त्यर्थं पुण्य वाचनार्थं नवरत्न, गंध, पुष्पाक्षतादि बीजपूर शोभित शुद्ध प्रासुक जल परिपूरित मंगल कुम्भं मण्डपाग्रे स्वस्त्यै स्थापनं करोमि झं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

नांदी कुंभ को सूत्र से बाँधने का मंत्र

ॐ नमो भगवते अ सि आ उ सा ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं संवौषट् त्रिवर्ण सूत्रेण शांति वेष्टयामि कुम्भं

धूपघट स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म भस्मीकरणाय सर्व दिग्वात सुगंधि करणाय दशांग धूप क्षेपणार्थं ईशान आग्नेय नैऋत्य वायव्यकोणे धूपघट स्थापनं करोमि।
(चारों विदिशाओं में धूपघट स्थापित करें।

दीपक स्थापन

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकर – मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।
ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।
(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें)

लघु अभिषेक पाठ

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पवित्रतर जलेन शुद्धिं करोमि
(जल से शुद्धि करें)

श्रीमज्जिनेन्द्र – मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायक–मनन्त चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ – सुदृशां सुकृतैक हेतुर्,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि ।। 1।।
ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलिं क्षिपामि।

सौगन्ध्य–सङ्गत–मधुव्रत झङ्कृतेन,
सम्वर्ण्य – मानमिव गन्धमनिन्द्य–मादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वर – वृन्द – वन्द्य –
पादारविन्द – मभिवन्द्य जिनोत्तमानम्।। 2।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्ग शुद्धिं कुरु कुरु।
(यह पढ़कर चन्दन से तिलक लगाना व हाथ धोना)

ये सन्ति केचिदिह दिव्य–कुल–प्रसूताः,
नागा प्रभूत–बल–दर्पयुता विबोधाः।
संरक्षणार्थ – ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ।। 3।।
ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि।
(यह पढ़कर भूमि शुद्धि करें।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरै – र्यदनेकवारम्।
अत्युद्य–मुद्यत–महं जिनपाद पीठ,
प्रक्षालयामि भव –सम्भव – तापहारि ।। 4।।
ॐ ह्रीं श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि।
(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है, उस थाली को धोवें)

श्री शारदा – सुमुख – निर्गत – बीजवर्ण,
श्री मङ्गलीक–वर–सर्व–जनस्य नित्यम्।
श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं,
श्रीकार – वर्ण–लिखितं जिन भद्रपीठे।। 5।।
ॐ ह्रीं श्रीकार लेखनं करोमि।
(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है, उस थाली में 'श्री' लिखें)

यं पाण्डुकामल – शिलागतमादिदेव –
मस्ना –पयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याण–मीप्सुरह–मक्षत– तोय – पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय–बिम्बम्।। 6।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमा स्थापनं करोमि।
(यह पढ़कर श्रीवर्ण पर प्रतिमा स्थापन करना चाहिए)

सत्पल्लवार्चित – मुखान् –कलधौतरौप्य –
ताम्रारकूट – घटितान्पयसा सुपूर्णान्।
सम्वाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाज्जिन वेदिकान्ते ।। 7।।
ॐ ह्रीं स्वहस्ते चतुःकोणेषु कलश स्थापनं करोमि।

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्धकैः।
धवल मंगल गान – रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

दूरावनम्र सुरनाथ – किरीट – कोटी –
संलग्न–रत्न–किरणच्छवि–धूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद – ताप – मल – मुक्तमपि प्रकृष्टैर्,
भक्त्या जलैर्जिनपतिं, बहुधाभिषिञ्चे ।। 8।।

1. ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विन्शति तीर्थंकर परं देवं आद्यानामाद्ये–मध्यलोके – जम्बूद्वीपे – भरत क्षेत्रे – आर्य खण्डे – भारतदेशे........... प्रदेशे...........जिले.......मासे........ . पक्षे ....वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक–श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः। (मुनि–आर्यिका–श्रावक–श्राविका जो तीर्थंकर भगवान् के ऊपर जल की धारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।)

2. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय–द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेकं करोमि ।

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगलगान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्वपा.।

इष्टैर्मनोरथ – शतैरिव भव्य पुंसां,
पूर्णै सुवर्ण कलशै–र्निखलै–र्वसानैः।
संसार सागर – विलंधन, हेतु – सेतु –
माप्लावये त्रिभुवनैक–पतिं जिनेन्द्रम्।। 9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विन्शति तीर्थंकर परं देवं आद्यानामाद्ये–मध्यलोके – जम्बूद्वीपे –
भरत क्षेत्रे – आर्य खण्डे – भारतदेशे.......... प्रदेशे........जिले.......मासे.... पक्ष.........वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक– श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः। (मुनि – आर्यिका – श्रावक–श्राविका जो तीर्थंकर भगवान् के ऊपर जल की धारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।)

तीर्थोत्तम–भवै–र्णैरैः
क्षीरवारिधि–रूपकैः
स्नपयामि सुजन्माप्तान्
जिनान् सर्वार्थ सिद्धदान्

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तान जलेन स्नपयामि स्वाहा ।
नोट – सुविधानुसार मंत्र को (9,27,108) बार पढ़ते हुए अभिषेक करें।

पानीय चंदन सदक्षत पुष्प पुंज,
नैवेद्य–दीपक–सुधूप–फल ब्रजेन।
कर्माष्टक क्रथन वीर – मनंत शक्तिं,
संपूजयामि सहसां महसां निधानम्।।10।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

नत्वा–मुहर्निज करै – रमृतोपमेयैः,
स्वच्छै – र्जिनेन्द्र तव चन्द्र करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितांतरम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।11।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब मार्जनं करोमि।

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगलगान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं सिंहासन स्थित अर्हत् देवाय अर्घ्यं निर्वपा.स्वाहा।

लघु शांतिधारा

(शान्तिधारा भगवान् के सिर पर अथवा यंत्र पर करें)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, श्री वीतरागाय नमः, ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते श्री पार्श्व तीर्थङ्कराय, द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्यमही व्याप्ताय, अनंतसंसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मण्डल–मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अधातिकर्म विनाशनाय (शान्तिधारा कर्ता का नाम)

अपवादं अस्माकं छिंद छिंद भिंद भिंद, मृत्युं छिंद छिंद भिंद भिंद।
अतिकामं छिंद छिंद भिंद भिंद, रतिकामं छिंद छिंद भिंद भिंद।
क्रोधं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्वोपसर्गं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्वविघ्नं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्वभयं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्वराजभयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व चोर भयं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्वदुष्टभयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व मृग भयं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्वमात्म चक्रभयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्वपरमंत्रं छिंद छिंद भिंद भिंद।

सर्व शूलरोगं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व क्षयरोगं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व कुष्ट रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व क्रूर रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व नरमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व गजमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्वाश्वमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व गोमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व महिषमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व वृक्षमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद
सर्व पत्रमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व पुष्पमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व फलमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व राष्ट्रमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व देशमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व विषमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व वेतालशाकनी भयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व वेदनीयं छिंद छिंद भिंद भिंद।
सर्व मोहनीयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व कर्माष्टकं छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र–विक्रम तेजो बल–शौर्य–वीर्य– शांतिं कुरु कुरु, सर्व जनानन्दनं कुरु कुरु, सर्व भव्यानन्दनं कुरु कुरु, सर्व गोकुलानन्दनं कुरु

कुरु सर्व ग्राम–नगर–खेट–कर्वट–मटंब–पत्तन–द्रोणमुख संवहानन्दनं कुरु कुरु, सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु, सर्व देशानन्दनं कुरु कुरु, सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु, सर्व दुःखं, हन–हन – दह–दह पच – पच – कुट–कुट शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि–र्व्यसन वर्जितं ।
अभयं क्षेम–मारोग्यं, स्वस्ति–रस्तु विधीयते।।

शिवमस्तु! कुल–गोत्र–धन–धान्यं सदास्तु पद्मप्रभ चन्द्रप्रभ–वासुपूज्य – मल्लि–वर्द्धमान–पुष्पदन्त शीतलनाथ–मुनिसुव्रत–नेमिनाथ–पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रह शान्त्यर्थ गन्धोदकं धारा वर्षणं)

श्री शान्तिरस्तु, शिवमस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, सर्वेषां पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, सुखमस्तु, अभिवृद्धिरस्तु, कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु, श्री सद्धर्म बल आयुः आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतुः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षाम – डामर विनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य चतुर्विध संघस्य तथैव सर्व विश्वस्य तथैव मम (शांतिधारा कर्ता का नाम) सर्व शान्तिं कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शान्तिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां,
शान्तिः निरंतर तपोभव भावितानां।

शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां,
शान्तिः स्वभाव महिमान–मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां,
यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः,
करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगलगान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय शांतिधारा अभिषेकान्ते अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वन्दे, अष्ट कर्म विनाशनम्।।

आरती

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू – बाजे घुँघरू
हाथों में दीपक ले के आरती करूँ।
क्रोध–मान नहिं माया लोभ – 2 राग – द्वेष नहिं मोह न क्षोभ – 2
तेरे गुण गाके सब पाप को तजूँ, हाथों में ....।
वीतरागता तन से झरती–2, पाके धन्य हुई ये धरती–2
तेरी छवि अपने हृदय में धरूँ, हाथों में ....।
तुम बिन मेरा कौन सहारा–2, नाम तुम्हारा सबसे न्यारा
एक तेरे पथ पर कदम धरूँ, हाथों में ....।
जिसने तुम को उर से गाया–2, उसने तुम्हें हृदय में पाया–2
तुमको अपने उर में रखूँ, हाथों में ....।
तेरी महिमा जग से न्यारी –2, भव्यजनों को लगती प्यारी –2
ध्यान तुम्हारा उर में धरूँ, हाथों में ....।
तेरे चरण रहें मम उर में–2, हृदय रहे तेरे चरणों में–2
अपना खुद से मिलन करूँ, हाथों में ....।
ज्ञान ध्यान तुम देते पाग.2, तेरा पथ है परम विराग.2
तुमको उर में 'विनम्र' धरूँ, हाथों में ....।
बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू–बाजे घुँघरू
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

विनम्रसागर

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।। 1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति–वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा, हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार।। 3।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण राश ।। 4।।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण–सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।। 5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछू उपाव।। 6।।

भविजन को भवकूप तैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथ पति, आतम गुण भण्डार।। 7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल।। 8।।

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ।। 9।।

चक्री खग धर इन्द्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।। 10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।। 11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे प्रभु, जय–जय–जय जिनदेव।। 12।।

थकी नाव भवदधिविषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय–जय–जय जिनदेव।। 13।।

रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भैंट्यो अबै, मैंटो राग कुटेव।। 14।।

कित निगोद–कित नारकी–कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।। 15।।

तुमको पूजैं सुरपति – अहिपति – नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ।। 16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार ।। 17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारि कैं, कीजै आप समान।। 18।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार।। 19।।

जौ मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर झार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार।। 20।।

वन्दों पाँचो परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश।। 21।।

चौबीसों जिनपद नमो, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु 'नमि', रच्यो पाठ सुखदाय।। 22।।

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परमपद, पञ्च धरों नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्।। 23।।

मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अर्हतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव।। 24।।

मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन वच काय।। 25।।

मंगल सरस्वति मातका, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म ।। 26।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल ''नाथूराम'' यह, भवसागर दृढ़ पोत ।। 27।।

पठन करूँ श्री आदि का अन्त नाम महावीर।
तीर्थंकर चौबीस जिन तिन्हें नवाऊँ शीश ।। 28 ।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि (कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।
ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः।
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं–अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित मन्त्रोऽयं, सर्वविघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
ऐसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी–भूत–पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

पंच कल्याण का अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे कल्याण–महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञान–निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति. स्वाहा।

सहस्रनाम का अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जिनसूत्र का अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री जिनसूत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेन्द्र – मभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद–नायक–मनंत–चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ–सुदृशां सुकृतैक हेतुर्,
जैनेन्द्र–यज्ञ–विधिरेष मयाभ्यधायि।। 1।।

स्वस्ति त्रिलोक–गुरवे जिन–पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश–सहजोर्ज्जित–दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न–ललिताद्भुत–वैभवाय।। 2।।

स्वस्त्युच्छलद् विमल–बोध–सुधा–प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक–विततैक–चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत–विस्तृताय।। 3।।

द्रव्यस्य शुद्धि–मधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि–मधिकामधि–गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ–यज्ञ–पुरुषस्य करोमि यज्ञं।। 4।।

अर्हत्पुराण–पुरुषोत्तम–पावनानि,
वस्तून्यनून – मखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद् विमल केवल बोध वह्नौ,
पुण्यं समग्र–महमेकमना जुहोमि।। 5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानम्।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षि उपासना

नित्याप्रकम्पाद्भुत–केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय–शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान–बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। 1।।

कोष्ठस्थ–धान्योपममेकबीजं, संभिन्न–संश्रोतृ–पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन–घ्राण–विलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञान–बलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 3।।

प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धा दश सर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 4।।

जंघानल–श्रेणि–फलांबु–तंतु–प्रसून–बीजांकुर–चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण–स्वैर–विहारिणश्च,–स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 5।।

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो–वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 6।।

सकाम–रूपित्व–वशित्वमैश्यं, प्राकाम्य–मन्तर्द्धि–मथाप्ति–माप्ताः।
तथाप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 8।।

आमर्ष – सर्वौषधयस्तथाशी – र्विषाविषा – दृष्टि – विषाविषाश्च।
सखेल्ल–विड्जल्ल–मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। 9।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतोऽमधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। 10।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपामि) कायोत्सर्गं करोम्यहम्

सम्यग्दर्शन पाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तेरे गुण को गाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तेरा ध्यान लगाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
अष्ट दरब को लाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
रत्नत्रय को भाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तुमसे मिलने आऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
निज में निज को पाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
आठों कर्म नशाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
गुल सा खिलने आऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तुम सा रूप बनाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(अडिल्ल छंद)

प्रथम देव अरिहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू,
गुरु निर्ग्रन्थ महंत मुकतिपुर पंथ जू।
तीन रतन जग माँहि सु ये भवि ध्याइये,
तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद

दोहा

पूजों पद अरिहंत के, पूजों गुरुपद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट–प्रकार।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु ! समूह अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु ! समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु ! समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

जल

सुरपति–उरग–नरनाथ तिनकर, वंदनीक सुपद प्रभा,
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल देख छवि मोहित सभा।
वर नीर क्षीर समुद्र घटभरि, अग्र तसु बहु विधि नचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

बहु तृषा सतायो, अति दुख पायो, तुमपै आयो जल लायो।
उत्तम गंगाजल, शुचि अतिशीतल, प्रासुक निर्मल गुन गायो।।
प्रभु अन्तरयामी, त्रिभुवन नामी सबके स्वामी दोष हरो।
मेरी अरज सुनीजै, ढील न कीजै, न्याय करी जै प्रभु दया करो।।

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र – गुरु तीन।।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चंदन

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी तपत अति दुर्द्धर खरे,
तिन अहित हरन सुवचन जिनके परम शीतलता भरे।
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

अघ जपत निरन्तर, अगनि पटंतर, मो उर अन्तर खेद करौ।
लै बावन चंदन दाह निकंदन, तुम पद वंदन हरष धरौ।। प्रभु.।।

चंदन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत

यह भव समुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठही,
अतिदृढ़ परम पावन जथारथ भक्तिवर नौका सही।
उज्ज्वल अखंडित, शालि तंदुल पुंज धरि त्रय गुण जचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

औगुन दुखदाता, कहो न जाता, मोहि असाता बहुत करै।
तन्दुल गुणमण्डित अमल अखण्डित, पूजत पण्डित प्रीति धरै।। प्रभु.।।

तन्दुल शालि सुगन्ध अति, परम अखण्डित बीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

जे विनयवंत सुभव्य उर अम्बुज प्रकाशन भानु हैं,
जे एक मुख चारित्र भाषित त्रिजग माँहि प्रधान हैं।
लहि कुंद कमलादिक पहुप, भव–भव कुवेदन सों बचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

सुर–नर–पशु को दल काम महाबल, बात कहत छल मोह लिया।
ता केशर लाऊँ, फूल चढ़ाऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ खोल हिया।। प्रभु.।।

विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

अति सबल मद कंदर्प जाको क्षुधा–उरग अमान है,
दुस्सह भयानक तासु नाशन को सुगरुड़ समान है।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

सब दोषन माँहीं, जा सम नाँहीं, भूख सदा ही मोय लागे।
सद् घेबर बाबर, लाडू बहुधर, थाल कनक भर तुम आगे।। प्रभु.।।

नानाविध संयुक्त रस, व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोह तिमिर महाबली,
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाश ज्योति प्रभावली।
इह भाँति दीप प्रजाल कञ्चन के सुभाजन में खचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
अज्ञान महातम, छाय रहौ मम, ज्ञान ढको हम दुःख पावैं।
तम मैंटन हारा, तेज अपारा, दीप सँवारा जस गावैं।।प्रभु.।।
स्व–पर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तम करि हीन।
जासों पूजों परम पद, देव – शास्त्र – गुरु तीन।।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्यत लसैं,
वर धूप तासु सुगंधिता करि सकल परिमलता हसैं।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलन माँहि नहीं पचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
इह कर्म महावन, भूल रहो जन, शिवमारग नहिं पावत है।
कृष्णागर धूपं, अमल अनूपं सिद्ध स्वरूपं ध्यावत है।। प्रभु.।।
अग्नि माँहि परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लोचन सु रसना – घ्राण – उर उत्साह के करतार हैं,
मौपे न उपमा जाय वरणी सकल फल गुणसार हैं।
सो फल चढ़ावत अर्थ पूरण परम अमृत रस सचूँ,
अरहंत – श्रुत सिद्धान्त– गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ
सबतैं जोरावर, अन्तराय अरि, सुफल विधन करि डारत हैं।
फल पुंज विविधभर नयन मनोहर, श्री जिनवरपद धारत हैं।। प्रभु.।।
जे प्रधान फल–फल विषैं, पंच करण रसलीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ,
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ।
यह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिव पंकति मचूँ,
अरहंत–श्रुत सिद्धान्त–गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
आठों दुखदानी, आठ निशानी, तुम ढिंग आनि निवारन हो।
दीनन निस्तारन, अधम उधारन, द्यानत तारन कारन हो ।। प्रभु.।।
वसु विधि अरध संजोय के, अति उछाह मनकीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

ऐ जी देव शास्त्र गुरु रतन शुभ–2 और तीन रतन करतार, आत्मन्....
..... चलो तो पूजन करि आवें।
ऐ जी पूजन की है अभिलाषा–2 बिन पूजन रहो न जाय आत्मन्....
ऐ जी जाइ मन्दिर के बीच में–2 और पार्श्वनाथ दरबार, आत्मन्....
ऐ जी पूरव चन्दा प्रभु बसें–2, और पश्चिम पारस नाथ, आत्मन्....
ऐ जी पूजन तैं सुख सम्पति हो–2 और सिद्ध शिला को पाय,आत्मन्....
ऐ जी कल्प वृक्ष सम पूजा फल–2 और महिमा कही न जाय,आत्मन्....
ऐ जी शान्तिनाथ सुख दाता हैं–2 पूजक को सुखी बनाय, आत्मन्....
ऐ जी भगवन के गुण धरि लीजै–2 गुण भव से पार लगाय, आत्मन्....
ऐ जी अरज प्रभु के चरणों में–2 आरती कर गुण को पाँय, आत्मन्....
ऐ जी भिन्न भिन्न कहुँ आरती–2 और अल्प सुगुण विस्तार, आत्मन्....

पद्धरि छन्द

चउ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाश,
जीते अष्टादश दोष राश।
जे परम सुगुण हैं अनंतधीर,
कहिवत के छ्यालिश गुण गंभीर ।।1।।

शुभ समवशरण शोभा अपार,
शत इन्द्र नमत करि शीशधार।
देवाधिदेव अरहंत देव,
वन्दौं मन वच तन करि सुसेव ।।2।।

जिनकी ध्वनि है ओंकार रूप,
निरअक्षरमय महिमा अनूप।
दशअष्ट महाभाषा समेत,
लघु भाषा सात शतक सुचेत ।।3।।

सो स्याद्वादमय सप्त भंग,
गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय,
सो शास्त्र नमूँ बहु प्रीति ल्याय।।4।।

गुरु आचारज–उवझाय–साध,
तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध ।
संसार देह वैराग्य धार,
निरवांछि तपैं शिवपद निहार।।5।।

गुण छत्तिस–पच्चिस–आठ बीस,
भव तारण तरण जहाज ईश।
गुरु की महिमा वरणी न जाय,
गुरु नाम जपौं मन–वचन–काय ।।6।।

सोरठा

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरैं।
'द्यानत' सरधावान, अजर–अमर पद भोगवैं।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जयमालाये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे नर परम सुभावन तैं पूजा करें,
हरि–हल–चक्री होंय राज्य छः खण्ड करें।
फेर होंय धरणेन्द्र इन्द्र पदवी धरें,
नानाविध सुख भोग बहुरि शिवतिय

।।इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।

आनन्द भारी आया, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तेरा ध्यान लगाया, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तेरे गुण को गाया, प्रभु जी तेरी पूजा में।
सम्यग्दर्शन पाया, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तुमसे मिलने आया, प्रभु जी तेरी पूजा में।
निज में निज को पाया, प्रभु जी तेरी पूजा में।

कविवर पण्डित टेकचन्द विरचित

रत्नत्रय विधान

(रत्नत्रय उद्यापन)

प्रस्तावना बेसरीछन्द

सरधो जानो पालो भाई, तीनों में कर राग जुदाई।
लै लै नीका द्रव्य सुसारा, पूजे पाओ मोक्षागारा।।

नाराच छन्द

भला सुज्ञान दर्शना – चरित्तरा सुसार है।
भवसमुद्रनाव मोक्ष – पन्थ का आधार है।

यही जु पन्थ सिद्धि का, नहीं जु और जानिये।
जजों सुदर्श ज्ञान वा, चरित्र भक्ति आनिये।।
सार येहि तीन रत्न, पारखी मुनीन्द्र हैं।
लहें जु राग छांड़ि या, बिना गुणी न सोह हैं।
नहीं जु राग द्वेष ताहि, पाइये कदा सही।
तीन रत्नरूप वस्तु, चित्त में जिन्हों लही।।
मुनीन्द्र याहि पायके, न पांय फिर भवा सही।
जिनेन्द्र याहि पायके, प्रिया शिवा तिया गही।।
यही जु तहन मानका, जु मोक्षपन्थ जानका।
यही जु ज्ञान केवला, निकट्ठ वेग आनका।।
यही जु तीन रत्न इन्द्र, चन्द्र को नहीं मिलै।
खगा फणीन्द्र चक्रि को, न भूप को धरा तले।।
मुनी बिना सराग के, न पाइये कभी सही।
जु तीन होय एकटे, जिनेन्द्र के गुणा यही।।
नमों जु ज्ञान दर्शना, चरित्र जो शिवा यथा।
रहे सदा हिये सुभक्ति, मो तनें इन्हीं कथा।।
भवान्तरे मिलैं सु मोहि, तीन रत्न आयकें।
न चाह और मोय है, सुनों जु अर्ज ध्यायकें।।

गीतिका छन्द

ये तीन रत्न अपार मौलिक, पारखी विरलो सही,
जिय मोह अन्ध न भेद पावे, खेद जो बहुतो लही।
होवे निकट भव अब्धि जाके, सो लहे सहजहिं भया,
मुनि होय राज्य विहाय पावे, शाश्वतो पद इन दया।।
इन ही प्रभावै मोक्ष पावे कर्म नाशै भवकरा,
सुख होय सब दुख खोय, सहजहिं स्वर्ग पावे मनहरा।
ये ज्ञान सम्यक दर्श चारित, तीन ही सुखदाय हैं,
इन धार जग में पूज्य पदवी, लहे जिन धुनि गाय हैं।।

अडिल्ल छन्द

रत्नत्रय भव हरे, स्वर्ग शिवदाय जी,
रत्नत्रयसम आभूषण, न दिखाय जी।
याकी महिमा देख, इन्द्र से पग परें,
ये त्रय ज्ञान बढाय, सिद्धथल ले धरें।।

चौपाई छन्द

रत्नत्रय बिन भव भरमाय, रत्नत्रय तजि पाप कमाय।
अब हम उर वाञ्छा यों यही, मिले हितु रत्नत्रय सही।।

सोरठा –

यह रत्नत्रय सार, शरण मिल्यो हमको सही।
भवदधि तारन हार, तातैं मैं पल पल नमों।।

दोहा –

रत्नत्रय जग में कहा, मुक्ति महा फलदाय।
योग शुद्ध करके नमों, भवदधि लेहुँ नसाय।।

।।अथ समुच्चय पूजा।।

स्थापना ।। गीतिका छन्द।।

सत्य दर्शन ज्ञान चारित, मोक्ष मारग जिन कहे,
मोक्षाभिलाषी धरें इनको, इन बिना शिव ना लहे।
यों जानि तीनों रत्न पूजों, ध्याय के इसही धरा,
उर भक्ति धर मन वचन काया, ता फलें सब अघ हरा।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूप रत्नत्रयधर्म ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

।। चाल मुनियानन्दी।।

नीर निरमला पदम, कुण्ड को सार जी,
उज्ज्वलो क्षीरसम, सरस सा धारजी।
रत्नझारी विषैं, लेय गुण गाय के,
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम्।

बावनो चन्दना, अगर शुभ लाइये,
नीर निरमल थकी, घसि सुरभि लाइये।
कनक पियाले विषैं, धरि सुगुन गाय के । जजों0।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं।

श्वेत अक्षत सुभग, शुद्ध नख सिख सही,
गन्धधर यों यथा, फूल कुन्दा कही।
धार पातर विषैं, आप कर लायके, जजों0।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं।

फूल कल्पवृक्ष के, रंग नाना धरें।
गन्ध आपनी घनी, भ्रमर मन वश करें।।
पुष्प ऐसे तनी, माल कर लाय के, जजों0।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं

सुभग नैवेद्य जो, भले रस धार जी,
सद्य मोदक घने, स्वाद करतार जी।
यों चरू कंचन के, पात्र धर लाय के,
जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं।
दीप मणिमय महा, ज्योतिकर्त्ता सही,
तेज ताके कने, ध्वांत भागे सही।
धार शुभपात्र में, दीप कर लाय के, जजों।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं।
धूप दशधा महा, गन्ध पूरित कही,
बहु चन्दनादि शुभ, द्रव्य संयुत सही।
लेय कर धूप यों, अगनि में लाय के, जजों।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं।
लौंग खारक भले, श्रीफला सार जी,
सुभग बादाम पुंगी, फलाधार जी।
इन आदि लेय फल, आप कर लाय के, जजो0।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं।
नीर चन्दन अखत, फूल चरु जानिये,
दीप अरु धूप फल, अर्घ्य कर आनिये।
धारि उर भक्ति गुन, गान सुख पाय के, जजों0।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं।
दरश ज्ञान वृत्त ये, रत्न शुभ हैं सही,
यही तीन रत्न शिव, लोक को दे मही।
जान यों अर्घ्य ले, आय उमगाय के, जजों0।
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये महार्घ्यं।

जयमाल

तीन रत्न मुनिराज धन, अविनाशी बिन छेह।
इन्द्र स्तुतिवांछा करे, कवि माँगत है मेह।।

त्रिभंगी छन्द

सम्यक दृग जाके, हो शिव ताके,
दोष न वाके, होय कदा।
सम्यक् शुध जानो, हो भ्रम हानो,
तत्त्व पिछानो, मोक्ष पदा।
चारित मुध धारे सम्यक् लारे,
भवदधि तारे नाव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना पूज तिसो।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा,
अध तैं न्यारा धर्म धरे।
शुध ज्ञान उपावा सो शुध भावा,
शिवमग धावा कर्म हरे ।।
शुभ चारित नीका सुखदा जियका,
शिव तिय पियका मीत जिसो, यह.।।
तिस सम्यक् पाया, दोष उड़ाया,
जिनगुण गाया, ज्ञान धरं।
ले सम्यक् ज्ञानी अमृत पानी,
भवतप हानी, पुष्ट करं।।
चारित भवसागर, नाव उजागर,
पार उतारन, जान तिसो, यह.।।
सुध सम्यक् सारं, भविजिय धारं,
है भव तारं, सिद्ध थलं।
यह सम्यक् ज्ञानं, भ्रमतम हानं,

सब विध जानो, युक्त कलं।।
चारित शुध सोई, शिवमग जोई,
तारक जो हो, नाव जिसो।।यह.
सम्यक् परभावा, नहिं भवदावा,
मरण मिटावा, सुखकारी।
जो सम्यग्ज्ञानी, दया – निधानी,
सब विध ज्ञानी, गुणधारी।।
सम्यक् चारित्ता, जग जिय मित्ता,
सज्जन चित्ता, मित्र तिसो।।यह.
सम्यक् धन जाके, सुर नत बाके,
कमी न वाके धन – धारी।
जे सम्यग्ज्ञानी मिथ्याभानी,
ज्ञान पिछानी, सुखकारी।।
चारितधर जोगी, शिवतिय भोगी,
मोक्ष नियोगी, जीव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना,
गुरु वच इतना पूज इसो ।। यह.
सम्यक् सुध सोही, लखे न मोही,
सत्य जु सो ही कर्म हरे।
जिन भाषित ठाने, निज पर जाने,
सम्यग्ज्ञानं सोहि धरे।।
जो चारित धारे, कर्म निवारे,
आत्म सुधारे, ध्यान जिसो।।यह.
सम्यक् सरधाना, कुगुरु छुड़ाना,
बुध परधाना, मोक्ष चहा।
सो सम्यग्ज्ञानी, जिनध्वनि जानी,
सब विध मानी, और कहा।।
जे चारित धारी, निज अघहारी,
पुण्य भण्डारी, जान जिसो।।यह.

दोहा –

सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित देहु मिलाय।
तीनों शिवमग जिन कहे, जो होते शिवदाय।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो महार्घ्यं।

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

अडिल्ल छन्द

सम्यग्दर्शन सोय, जहाँ वसुमद नहीं,
शंकादिक वसु दोष, रहें जामें नहीं।
नहीं मूढ़ता तीन, अनायतन षट् नहीं,
या विष समकित थाप, जजों शुभफल मही।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ अष्टकम्

गीता छन्द

वर नीर सागर क्षीर जै सो, उज्ज्वलो सुखदाय जी,
शुभगन्ध निर्मल स्वाद याको, सद्य शुद्ध सुल्याय जी।
धरि रतनझारी हाथ ले निज, भक्ति उर में बहु धरी,
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

बावनो चन्दन सुगन्ध सु, नीर संग घसि लाय हों,
शुभ अगर आदि मनोज्ञ गन्ध, सु तास में मिलवाय हों।
ले कनक पातर भावशुभ तैं, भक्ति – धन लक्षहिं धरी, मैं।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं।

अक्षत अखण्डित बीन नख शिख, शुद्ध उज्ज्वल लाय जी,
शुभ गन्धमय अति धोय नीके, आप कर सुखदाय जी।
कर भले पातर माँहिं तिनको, भक्ति शुभ फलदा करी।मैं0

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं।

फूल शुभतर वरन नाना, जाति हू बहुविध सही,
अति गन्ध युत सुरवृक्ष के शुभ, जाय उपमा ता कही।
कर माल तिनकी हाथ ले निज, भावना सुध उर धरों, मैं.।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं।

नैवेद्य मोदक आदि नीके और ले बहुविध कही,
तिन माँहिं नाना मेल रसको, स्वाद को मानों मही।
चरु करी या विध धारि पातर, भक्ति मन वच तन धरों, मै.।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

कर दीप मणिमय ज्योति धारी, नाश कर तम को सही,
धर मध्य पातर हेम के शुभ, आरती करनी चही।
उर भक्ति मनवचकाय धरि करि, विनय तें मुख थुति करों, मैं।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं।

धूप दशधा द्रव्य ले के, करी है सुखकार जी,
तिस माँहिं गन्ध अपार प्रसरत, भ्रमर शब्द उचार जी।
इस जाति की शुभ धूप लेकर, अग्नि में थुति कर धरों, मैं।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अष्टकर्म दहनाय धूपम्।

श्रीफल सुपारी लोंग खारक, चोंच मोच बदाम जी,
इन आदि और अनेक फल ले, महाशुभ के धाम जी।
ले भक्ति कर धर सुभग बासन, आपने घर ले धरी, मैं.।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप सु फल सही
सब मेल अर्घ्य बनाय नीको, भले पातर में लही।
उर भक्ति मन वच काय करके, एक ध्यान सु ले करी,मैं।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं

प्रत्येकार्घ्य

त्रिभंगी छन्द

मम नाना मामा, अतिबल ठामा,
धन के धामा, सुखदाई।
तिन राज सुजानैं, सब जग मानें,
वचन प्रमानें, सब भाई ।।
यह 'जाति' सुमद्दा, जानि निषिद्दा,
अघ को हद्दा, जान हिये।
याकों जु निवारे, सम्यक् सारे,
शिव पद धारे, जजि थुति ये।।

ॐ ह्रीं जातिमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।1।

है बाप हमारा, सुत धन वारा,
सब को प्यारा ज्ञानमई।
सुत दारा मेरा, नृप ढिंग केरा,
काम करेरा, जान सई।।
यह 'कुलमद' जानो, अघ को थानो,
तज वच नानो, बात हिये।
सम्यक् या बिन सों, मोक्ष करन सों,
जजि भवि मन सों, भक्ति दिये।।

ॐ ह्रीं कुलमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।2।

मैं बहुत कमाऊँ, द्रव्य उपाऊँ,
सब दिशि जाऊँ खेप लई।
मो में बुध नीकी, वनज करे की,
युक्ति धरे की, बात सई।।
जँह ही मैं जाऊँ, आदर पाऊँ,
नव–निधि लाऊँ, जान हिये।
यह धन का मद्दा, जान निषिद्धा,
सम्यक् शुद्धा, जजि थुति ये।।

ॐ ह्रीं धनमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।3।

जो रूप हमारो, और न धारी,
मोसे हारी मदन जिसो।
सुर हूँ लखि लज्जे, यों छवि छज्जे,
बहु कहा कहिज्जे जान इसो।।
यह 'रूप मदा है' ज्ञान जुदा है,
सम्यक् दाहै, आप मई।
तज याको भाई जजि थुति लाई,
सम्यक् पाई मोक्ष सई।।

ॐ ह्रीं रूपमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।4।

मैं तपसी भारी शक्ति अपारी,
वास धरारी वरष मई।
चंचल मन जीत्या भवभव भीत्या,
नहिं तन मीत्या जान भई।।
यह 'तपमद' जानो अघ को थानो,
दोष बढ़ानो कर हानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं तपोमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।5।

हम बहु बलवाना, मल्ल समाना,
गजमद हाना जोध यही।
मेरे बल आगे, अरि भय लागे,
को मो आगे, वीर कही।।
यह 'बल' को मद है, अघ को हद है,
सब हित रद है करि हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं बलमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।6।

मैं बहुश्रुत जोई, भरम न कोई,
चर्चा जोई, बात करो।
मैं षट् मत जोये पंडित टोये,
सब मत धोये ज्ञान धरो।।

'विद्यामद' ये ही तजि भवि जेही,
सरधा ये ही, जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।
ॐ ह्रीं विद्यामदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।7।

मोकों नृप जाने, मुखिया मानें,
जग सन्माने, हुकम घनों।
चाहों मैं मारों तथा उधारों,
वचन उचारों सोइ ठनों।।
यह मद 'अधिकारी', तज भवधारी,
भाव सम्हारी धुनि ठानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ॐ ह्रीं अधिकारमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।8।

जँह शंका आवे, धरम नशावे,
पाप बढाये दुखदाई।
शंका जब होई सम्यक् खोई,
सरधा वोई मनलाई।।
यह शंका मल है फल अति खल है,
त्याग सु–कल है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ॐ ह्रीं शंकामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।9।

जो वृष – रस चाखे, फल अभिलाखे,
जगसुख भाखे, मोहि मिले।
मैं जिनवृष सेऊँ खगथल लेऊँ,
सुरसुख वेऊँ चाह फले।।
यह वाञ्छा जानो, कांक्षा आनो,
तज वच आनो, जिनवाणी।
सम्यक् सुध सोई जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ॐ ह्रीं कांक्षामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।10।

पर वस्तु सु जोवे, धिन चित बोवे,
अरति बढ़ोवे मन माहीं।
यह वस्तु बुरी है क्यों जु धरी है,
कौन करीहै दुखदाई।।
यह दोष विचिकित्सा अध को अंशा,
त्यागो मनसा श्रुतज्ञानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं विचिकित्सामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।11।

जो भेद न पावे, शीश नवावे,
भक्ति बढ़ावे, वेद कही।
सब को गुरु माने, ज्ञान न आने,
धर्म न जाने, शुद्ध सही।।
यह मूढ़ स्वभावा, पाप बढ़ावा,
तज सुख दावा, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं मूढ़तामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।12।

पर अवगुण जोई, ढकै न सोई,
मुख कह कोई, पाप धरा।
पर के छल देखे, कहत विशेखे,
सो अध भेखे, जान खरा।।
कह दोष पराया, यह अध भाया,
त्याग सुभाया, बुध आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं अनुपगूहनमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं । 13 ।

लख धर्म पराया दोष बढ़ाया,
पाप उपाया, मन ल्याई।
या धर्म बढाऊँ सो विधि लाऊँ,
ज्ञान बढ़ाऊँ, चित ल्याई।।
यह अवगुण जानो, अतिथि सुमानो,

तजि हित आनो, शुभ जानी।
सम्यक् सुध सोई जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं अस्थितिकरणमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।।14।

धर्मी जन जोवे, हरष न होवे,
समचित सोवे, अघ – हारी।
वृषथान निहारे, नेह न धारे,
सकति सम्हारे, अधिकारी।।
यह वत्सल नाहीं, पाप बढ़ाई,
तज मन लाई, बुध आनी।
सम्यक् सुधि सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं अवात्सल्यमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।।15।

उत्सव नहिं जाने, हरष न आने,
नाहिं सुहाने, मन माँहीं।
नहिं ताहि सरावे, जस नहिं गावे,
पाप कमावे, चित ठाँहीं।।
यह दोष बड़ा है, त्याग जुड़ा है,
धर्म बड़ा है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अध खोई,
जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।

ॐ ह्रीं अप्रभावनामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।।16।

चौपाई छन्द

ना सर्वज्ञ न तारन हार,
ताको पूजत देय निहार।
सो यह देवमूढ़ता जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं देवमूढ़तारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।।17।

धर्म दया बिन सो है सही,
धारण करे प्रतीक्षा नहीं।
सो यह धर्ममूढ़ता सोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं धर्ममूढ़तारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।।18।

वीतराग नहिं नगन शरीर,
सेवे कुगुरु राग धर धीर।
सो यह गुरूमूढ़ता जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं गुरुमूढ़तारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।19।

कर्मनाश बिन देव कहाय,
तिनको परशंसै थुति लाय।
यह अनायतन दोष सुजोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।20।

ताहि कुदेव सेवक हू जान,
परशंसे मन में हित आन।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।21।

दयारहित ही धर्म सु मान,
फिर ताकी परशंसा ठान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय ।।

ॐ ह्रीं कुधर्मप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।22।

हिंसाधर्म सेवकी जान,
ताको परशंसै शुभ मान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।23।

राग द्वेष धर प्रज्ञावान,
ये गुरु परशंसै बिन ज्ञान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनायार्घ्यं ।24।

कुगुरुन की सेवा जो करे,
ताकी परशंसा चित धरे।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनायार्घ्यं ।25।

यह द्यूत व्यसन है पाप – मूल,
यह खेल लहे जिय दुःखशूल।
दे अपयश वध बन्धन सु जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनायार्घ्यं ।26।

आमिष खाये मन अशुचिवान,
हिंसा या सम होवे न आन।
तिस देखत ही मन मलिन होय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ॐ ह्रीं आमिषव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।27।

पीके मदिरा मूर्छा लहाय,
सब सुध बुध अपनी दे गमाय।
यह मदिरा व्यसन सुधर्म खोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ॐ ह्रीं मदिराव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।28।

गणिका गिन पातल जूँठ जेम,
अति लोकनिन्द्य परसिद्ध येम।
यह व्यसन नरकपद दाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ॐ ह्रीं गणिका व्यसन रहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।29।

ये जीव घास खा वन वसाय,
तिनको मारे पारधि कुभाय।
यह व्यसन नरक मारग सजोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ॐ ह्रीं आखेटव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।30।

परद्रव्य हरे दुठ चोर जान,
लहिं वध बन्धन जगनिन्द्य थान।
यह चौर्यव्यसन दुखदाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ॐ ह्रीं चौर्यव्यसनरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।31।

परनारि व्यसन दुठ जीव धार,
सो लहें नरक दुख पाप भार।
यह व्यसन महादुखदाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ॐ ह्रीं परनारिव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।32।

चौपाई छन्द

किये दान संक्रान्ति सुजान,
होय सुखी नाहीं दुख मान।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुपर्वदानदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।33।

ग्रह पूजें सुख साता मान,
नहिं पूजें दुखकूप बखान।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इसविधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्यादिग्रहपूजारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।34।

पूजें भूमी भूपति थाय,
इसविधि मिथ्याभाव उपाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं भूमिपूजारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।35।

हिंसागम जो सेव कराय,
मिथ्या मन्त्र जन्त्र पुजवाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।36।

पर्वत पूजें तीरथ जान,
जाके जजें होय नित मान।
ऐसा भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं पर्वतादिपूजामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।37।

उदधि नदी सपरें अघ जाय,
होय पुण्य जिय को सुखदाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं उदधिस्नानमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।38।

अग्नि माहिं जीवित जर जाय,
देवपना वे जीव लहाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं अग्निपातमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।39।

कुगुरु सेवतें साता पाय,
यह दे ऋद्धि परम सुखदाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इसविधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।40।

अग्नि देव कर मानें सही,
पूजें दीपक हो शुभ कही।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं अग्निसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।41।

गायमूत्र अतिपूत बताय,
या लागे तन निर्मल धाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं गौमूत्रसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।42।

गज घोटक वृष सेव कराय,
इप सेये इन लाभ लहाय।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं वाहनसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।43।

असि बरछी भाला बन्दूक,
पूजें शक्ति लहे ना चूक।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं शस्त्रपूजामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।44।

बालक पूजें देव सु मान,
सो सब मिथ्यातम मतिमान।
ऐसो भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं बालकपूजामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।45।

गिरि ते पड़तो काय छुडाय,
तो वांछितसुख को जन पाय।
ऐसा भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं गिरिपतनमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।46।

हिंसकदेव दया बिन जान,
देखत क्रूर जजें सुख मान।
ऐसा भरम जहाँ नहिं होय,
इस विधि जजि सुध समकित सोय।।

ॐ ह्रीं हिंसकदेवसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।47।

निशा अहार करे नहिं जोय,
जाके उर करुणा बहु होय।
माँसाहारी निशि को खाय,
या बिन जजि सुध समकित भाय।।

ॐ ह्रीं निशाहारमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।48।

अनगाल्यो जल पीवे नाँहिं,
दयासहित उर धर्म सुभाय।
ऐसो गुण जाके बहु होय,
सो समकित पूजें सुख होय।।

ॐ ह्रीं अगालितजलपानमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।49।

इत्यादिक गुणजुत जो होय,
कहे दोष ते एक न जोय।
निश्चय अरु व्यवहार सुधाय,
सो समकित पूजों थुति लाय।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं ।50।

समकित साँचा धर्म है, मोक्षवृक्ष को मूल।
श्रद्धा करना गाढ उर, हरे विषय अधशूल।।

समकित सार धर्म का बीजा, यातें पापमैल सब छीजा।
याही तें जगपूज्य कहावे, यों ही जामनमरण मिटावे।
समकित सो नाहीं धन कोई, समकित कल्पवृक्ष सम होई।
समकित के गुण मुनिगण गावें, समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित ही सब कारज सारे, समकित मिथ्यारोग निवारे।
समकित शुद्ध धर्म कहलावे, समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित रतन जास मन माहीं, ता सम आभूषण जग नाहीं।
समकित सुर शिव थान दिखावे, समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित बिन मुनि को शिव नाहीं, समकित सहित जीव शिव पाहीं।
समकित देव धर्म बतलावे, समकित जामनमरण मिटावे।
समकित अग्नि कर्म निज जारे, समकित मोह – मल्ल को मारे।
समकित ही भ्रम दूर हटावे, समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित तें हरि को पद होई, समकित फल अहमिन्द्र सु होई।
समकित सहित मुक्तिपद पावे, समकित जामनमरण मिटावे।।

दोहा

समकित मेरे शीश पर, करो वास यह आश।
समकित गुण ही मुख रहे, जब तक तन में श्वास ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जयमालाये महार्घ्यं।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजा प्रारम्भ

मति श्रुत अवधिज्ञान मन लाय, मनपर्यय केवल समुझाय।
ये ही पाँचो सम्यग्ज्ञान, पूजों थाप यहाँ हित आन।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

भुजंगप्रयात छन्द

लिया नीर चोखा, पदम कुण्ड केरा,
महा निर्मला गन्ध, जुत भर्म हेरा।
भर्‍यो स्वर्ण झारी, घनी भक्ति लाई,
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्यदाई।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय जलं ।1।

भला गन्ध धारी, लिया चन्दना है,
घिसा नीर से फेर, कर वन्दना है।
धरी भक्ति उर में, भले पात्र लाई,
जजों ज्ञान सम्यक्, घना सौख्यदाई।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय चन्दनं ।2।

भले तन्दुला ऊजरे खण्ड नाहीं,
घरें गंध नीको भली शोभ माहीं।
लिये हाथ हमने घनी भक्ति लाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय अक्षतं ।3।

भले गन्धयुत फूल ले माल कीनी,
घने वर्ण के कोमला भक्ति चीनी।
धरै हाथ माहीं भली भक्ति गाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय पुष्पं ।4।

नैवेद्य नीका हितू जान जिय का,
भले मोदकादी रस डारि नीका।
धरे पात्र में हाथ ले भक्ति गाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं ।5।

करे दीप तमनाश शुभ रत्न केरा,
धरे थाल माहीं खुशी चित्त मेरा।
करो आरती हर्ष सह भक्ति भाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय दीपं ।6।

धरी धूप दशधा भली गन्ध धारी,
लिये चन्दनागुरु सुगन्धी है भारी।
करो वीनती अग्नि में खेय भाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय धूपं ।7।

लिये श्रीफला लोंग खारक बदामा,
इन्हें आदि फल और बहु जान कामा।
धरे पात्र माहीं घनी भक्ति लाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय फलं ।8।

लिया नीर चन्दन अखत पुष्प जानो,
नैवेद्य फल दीप अरु धूप मानो।
करो अर्घ्य सुन्दर घनी भक्ति गाई, जजों।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं ।9।

प्रत्येकार्घ्य (बेसरी छन्द)

सपरस इन्द्रिय तें सब जानें, विषय आठ ताकी विधि मानें।
सम्यक् सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।1।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

रसना ते जो विषय पिछाने, पाँच भेद सब अंश सु आने।
सम्यक् – सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।2।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

घ्राणेन्द्रिय जाने जो भाई, दोय भेद ताकी विधि गाई।
सम्यक् – सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।3।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

चक्षु विषय पंचविध जाने, लाल पीत श्यामादिक माने।
सम्यक् – सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।4।।

ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

श्रोत्रेन्द्रिय तो शब्द पिछाने, सात भेद ताके पहिचाने।
सम्यक् – सहित ज्ञान जो होई, सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।5।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेयन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

जो जो मन विकलप ते जोवे, भई होयगी अब जो होवे।
सम्यक् सहित ज्ञान जो होई सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।6।।

ॐ ह्रीं मनोद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

चौपाई छन्द

ग्यारह अंग पूर्वादि सु जान, अंग बारहो सुरति बखान।
ये सब सम्यक् सहित सुभाय, सो श्रुतज्ञान जजों हर्षाय।।7।।

ॐ ह्रीं अंगपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

खावे जतन जतन तें चले, बोले जतन जतनतें हले।
आचारांग क्रिया यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।8।।

ॐ ह्रीं आचारांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

अध्ययनविधि विनयादिक और, निजपरिणति वेदन जग मौर।
सूत्रकृतांग विषैं यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सूत्रकृतांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जीव स्थान उन्नीस बताये, तथा चार सौ षट् श्रुत गाये।
अंग स्थान माँहि यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीस्थानांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

होवे जो जो धर्म समान, द्रव्य क्षेत्र कालादिक मान।
समवायांग यथाविधि कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवायांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

अस्ति नास्ति आदिक स्याद्वाद, एकानेक करे जो वाद।
व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग यो कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।12।।

ॐ ह्रीं श्री व्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जिन अतिशय जिनध्वनि प्रगटाय, समवसरण आदिक गुणगाय।
ज्ञातृकथा अंग में यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीज्ञातृकथाश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

एकादश प्रतिमा विधि जोय, और बहुत श्रावक विधि होय।
अंग उपासक में यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीउपासकाध्ययनांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

एक एक जिन समय मँझार, अन्तःकृत केवल षट् चार ।
अन्त कृतांग माँहि यों कही, सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीअन्तःकृतदशांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

एक एक जिन वारें सोय, दश दश मुनि अहमिंद्र जु होय।
अंग अनुत्तर में यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही ।।16।।
ॐ ह्रीं श्रीअनुत्तरोत्पादकदशांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

गई वस्तु लिख मूठी माँहि, पूछे प्रश्न कहें मुनि ठाँहिं।
प्रश्न व्याकरण अंग यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।17।।
ॐ ह्रीं श्री प्रश्नव्याकरणश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

शुभ अरु अशुभ कर्मफल जान, तीव्र जु मन्द विपाक बखान।
सूत्रविपाक अंग यों कही, सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।18।।
ॐ ह्रीं श्री विपाकसूत्रांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

!! अडिल्ल छन्द !!

व्यय ध्रौव्य अरु उत्पाद द्रव्यलक्षण सही,
गुण पर्यय द्रव्य माँहिं, और बहु विध कही।
यह पूरब उत्पाद, माँहिं व्याख्यान है,
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।19।।
ॐ ह्रीं श्री उत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जामें दुर्नय तथा, सुनय व्याख्यान है,
अस्तिकाय अरु द्रव्य, तत्त्व शुभ ज्ञान है।
अग्रायण पूरब में, यों व्याख्यान है,
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।20।।
ॐ ह्रीं श्री अग्रायणीपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

द्रव्य आत्म पर वीर्य, काल वीरज सही,
वीरज उभय अपार, तपो वीरज कही।
वीरज गुण अनुवाद, माँहिं यों ज्ञान है,
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।21।।
ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

अस्ति नास्ति वस्त्वादि स्वभाव विषैं सही,
नित्यानित्य अनेक एक आदिक कही।
अस्ति नास्ति पूरब में ऐसा ज्ञान है।।सो.।।22।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

आठ ज्ञान फल विषय, नाम वर्णन सही,
और अवान्तर भेद, ज्ञान के सब कही।
ज्ञानप्रवाद सु पूरब, में व्याख्यान है,
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।23।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

भेद वचन सत असत उभय अनुभव सही,
वचनगुप्ति अरु भाषा, द्वादश जो कही।
सत्यप्रवाद सु पूरब इहविध ज्ञान है, सो.।।24।।

ॐ ह्रीं श्री सत्प्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

निश्चय आत्म अभेद–भेद व्यवहार है,
जीव पूज्य वा नहीं, पूज्य निर्धार है।
इस विधि आत्मप्रवाद, पूर्व में ज्ञान है। सो.।।25।।

ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

कर्मभेद तिन नाम, बन्ध चउविध सही,
उदय सत्व को आदि, कर्म रचना सही।
पूरब कर्म प्रवाद, माँहिं व्याख्यान है। सो.।।26।।

ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जामें समिति गुप्ति, अनुप्रेक्षादिक कही,
पाप त्यागविधि और महातप, अघ नहीं।
प्रत्याख्यान सु पूरब, इस विधि ज्ञान है। सो.।।27।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

विद्या–साधन मन्त्र, जन्त्र विधि जानिये,
स्वर लक्षण अरु स्वप्न, आदि विधि मानिये।
पूरब यह विद्यानुवाद, शुभ थान है, सो.।।28।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जिन कल्याणक उत्सव, त्रेसठ पद सही,
ज्योतिष गमन विचार, शकुन आदिक कही।
यो पूरब कल्याण, बाद में ज्ञान है, सो.।।29।।

ॐ ह्रीं श्री कल्याणवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

आयुर्वेद सु मन्त्र, जन्त्र तन्तर घने,
इन साधन की कला, और महिमा भने।
पूरब प्राणानुवाद, मांहि बहु ज्ञान है, सो.।।30।।
ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
छन्द तथा व्याकर्ण, संगीत कला सही,
चौसठ तिय की कला, काव्य की विधि कही।
क्रियाविशाल सु पूरब, मति को थान है, सो.।।31।।
ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
तीन लोक का कथन, मोक्ष व्याख्या सही,
गणितशास्त्र के सूत्र, और सब विधि कही।
त्रिलोकबिन्दु यह पूर्व महासुख थान है, सो.।।32।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकबिन्दुपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

।। जोगीरासा छन्द।।

समताभाव सकल जीवन पै, सम दम संयम भावे,
आरत रौद्र ध्यान निरवारै, धर्म शुक्ल उर लावे।
ऐसो कथन किया जिस माहीं, सो सामायिक जानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।33।।
ॐ ह्रीं श्री सामायिकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
जामें चौबीसों जिन स्तवन, अतिशय की विधि गाई,
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष की, और घनी विधि आई।
अंग चतुर्विंशति स्तवन में, जिन चर्चा पहिचानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।34।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिस्तवप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
जिन प्रमिता जिन मान लीजिये, भक्ति घनी मन लाई,
तीर्थंकर इक को सिर नावत, हाथ जोड़ि कर भाई।
वन्दनांग ये नाम जास की, तामें या विधि जानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।35।।
ॐ ह्रीं श्री वन्दनाप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
जा परमाद थकी अघ उपजे, ताके मेटन भाई,
पश्चाताप विधी ईर्यापथ, पाक्षिक वार्षिक गाई।
कहा अंग प्रतिक्रमण प्रभू ने, दोषहरण को थानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।36।।
ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमणप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

दर्शन ज्ञान चारित्र सुतप की, विनय कीजिये भाई,
गुरुजन गुणिजन को भी कीजे, विनयभाव शुभ लाई।
इत्यादिक इस विनय अंग में, विनयाचार बखानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।37।।

ॐ ह्रीं श्री विनयप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

नरदेवों के वन्दन की विधि, नति आवर्त सु भाई,
प्रदक्षिणा शुद्धि आदिक भी, श्रुति जैसी बतलाई।
क्रम – क्रम सकल कही है यामें, शुभदायक सुखदानी,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।38।।

ॐ ह्रीं श्री कृतिकर्मप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

मुनि यों भोजन पानी लेवें, यों चालें यों सोवें,
ऐसे वचन कहें मुख सेती, ऐसे अघ मल धोवें।
मुनि आचार भनो इस माँहीं, दशवैकालिक मानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।39।।

ॐ ह्रीं श्री दशवैकालिकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

मुनी सहें बावीस परीषह, तिन फल सकल जताये,
देव अचेतन नर तिर्यक्कृत, जो उपसर्ग बताये।
उत्तराध्ययन प्रकीर्णक माँही, सकल शुभाशुभ जानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।40।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तराध्ययनप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

यह आचार मुनीश्वर जोगा, यह जोगा है नाँहीं,
हो अयोग्य आचरण कभी तो, दण्डयोग्य मुनि माँहीं।
इत्यादिक अंग कल्पविहारै, कही सकल चित मानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।41।।

ॐ ह्रीं श्री कल्पव्यवहारप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

मुनि की किरिया द्रव्यक्षेत्र पुनि, कालभाव यों जोगा,
सोही विधि योगीश्वर ठाने, उपजे आत्म प्रयोगा।
कल्पाकल्प प्रकीर्णकांग अंग में, ऐसी वार्ता जानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।42।।

ॐ ह्रीं श्री कल्पाकल्पप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जिनकल्पी अरु स्थविरकल्पी, शिक्षा दीक्षा दानी,
पोषण आतम शुद्धि समाधि किरिया सकल बखानी।
उत्तमचर्या या आराधन, और घनी विधि जानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।43।।
ॐ ह्रीं श्री महाकल्पप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
चतुर्निकाय देवकुल में ज्यों पावे सुरतन भाई,
पूजा ज्ञान तपस्या समकित, निर्जर हेतु बताई।
पुण्डरीक अंग माँहिं कह्यो यह, कथन जीव सुखदानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य करि, पूजों मन वच आनो।।44।।
ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
किस तप ध्यान थकी मुनि उपजे अहमिन्दर पद भाई,
किस तपतें वा कौन ध्यानतैं, इन्द्रादिक हो भाई।
इत्यादिक विधि जामें गाई, पुण्डरीक सो जानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।45।।
ॐ ह्रीं श्री महापुण्डरीकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
जो जो अघ परमाद बढ़ावे, ता नाशन विधि गाई,
जो जो पाप मिटें जा विधि तें, सो सो सकल बताई।
नाम निषिधिका कहा तास का, ज्ञानागार बखानो,
या अंग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजो मन वच आनो।।46।।
ॐ ह्रीं श्री निषिद्धिका प्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

।।गीतिका छन्द।।

हैं आठ भेद निमित्त के सो ज्ञान अद्‌भुत है सही,
तिस ज्ञान की महिमा लखत ही भाव मिथ्या ना रही।
यह भलो ज्ञान अनूप फलदा होय सम्यक् सहित जी,
सो जजों मन वच काय यह श्रुत अरघ ते थुति कहत जी।।47।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।
आकाश में रवि चन्द्र तारा मेघ – पटलादिक सही,
सन्ध्यासमय के चिह्न और अनेक बातन को कही।
जो होय इनके निमित सेती शुभाशुभ सो जानिये,
अन्तरिक्ष हेतुक ज्ञान पूजों श्रेष्ठ सम्यक् मानिये।।48।।
ॐ ह्रीं श्री अन्तरिक्षनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

भूमि में रत्नादि कंचन धातु खानि सुजान है,
इन आदि और अनेक रचना भूमि की पहिचान है।
सो लखे ऐसो निमित ज्ञानी शुभाशुभ जाने सही,
भौमको यह निमित लख करि जजों सम्यक श्रुत सही।।49।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्भौमनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

मनुज तिर्यक देह के शुभ अशुभ चिह्न सु जानिये,
नख सुकेशादिक सुलखि कर इष्ट अनिष्ट बखाानिये।
यह अंग निमितज्ञान अद्भुत महासुखदा जोय जी,
मैं जजों अंग निमित्त सम्यग् ज्ञान श्रुत सो होय जी।।50।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्अंगनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

सुन शब्द नर तिर्यंच के जो शुभाशुभ जाने सही,
खर शब्द घूघू काक स्याल सु सेहिका की ध्वनि कही।
इन आदि वच सुन कहै सुख दुख निमित स्वर सो जानिये,
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक् अर्घ्य मन वच जानिये।।51।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

तिल मसा भोंरी गाँठ रेखा पाँच कर में जोय है,
तिस निमितज्ञान सु सकल जानें शुभाशुभ जो होय है।
यह ज्ञान व्यंजन निमित नीको शुभाशुभ निर्धार जी,
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक् अर्घ्य मन वच काय जी।।52।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्व्यंजननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

तन वृषभ स्वस्तिक कलश वज्र सुमच्छ इन आदिक सही,
सब जोय लक्षण देखि इनको शुभाशुभ भाषे यही।
यह ज्ञान लक्षण निमित आछो भले फल को दाय है,
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक् अर्घ्य ले सुख पाय है।।53।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

तहें पट सु भूषण शीश के कर वर पगों के जान जी,
तिनको जु काटें मूषकादिक भेद तिनको आन जी।
यह भेद शुभ अर अशुभ भाखै देखि के सुख दुख कहे,
यह छिन्न निमित सुजान नीको, पूज्य मन वच तन चहे।।54।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

जो लखे सपना शुभाशुभ को भेद सुख दुख आन जी,
इन आदि अंग अनेक समझे सकल भेद सु आन जी।
यह ज्ञान स्वप्न निमित्त जीको बड़े अतिशय धार जी,
सो जजों सम्यक् सहित मन वच श्रुतज्ञान सु सार जी।।55।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्स्वप्ननिमित्त श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

ये ही आठों निमित ज्ञान हैं, जग में अचरजकारी,
तिनको देखि भरम सब जावे, और घने गुण धारी।
सम्यक् जुत यह महाज्ञान – नद, याको मुनि अवगाहैं,
ऐसो लखि के मैं भी मन वच, अर्घ्य जजों हरषायें।।56।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं।

लोक असंखे क्षेत्र सुजाने, काल असंखो भाई,
द्रव्य लखे परमाणु सूक्षम, गाँव आदि अधिकाई।
ऐसी सर्वावधि ज्ञान लखि, मुनि बिन और न पावे,
तातैं मैं या ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिंग आवे।।57।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानाय अर्घ्यं।

लोक असंख्यो जाने क्षेत्रों, वरष असंख्यो कालो,
कार्माण तन सुख में जोवे, द्रव्य अपेक्षा वालो।
परमावधि सु ज्ञान बड़ा है, सर्वावधि लघु पावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिंग आवे।।58।।

ॐ ह्रीं श्री परमावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

तीनों लोक क्षेत्र की जाने, काल पल्य परिमानै,
द्रव्य अपेक्षा कार्माण तन, भाव यथावत् जाने।
अति उत्तम यह ज्ञान विषय है, देशावधि जनावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिंग आवे।।59।।

ॐ ह्रीं देशावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

उपजे जब ही अवधिज्ञान उर, आप महा सुखदाई,
तब ही तैं यह बढ़े आयु लों, नाहीं कबहुँ घटाई।
वर्धमान यह अवधिज्ञान है, समकित जुत मुनि पावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिंग आवे।।60।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यं।

हीयमान जो अवधि कह्यो है, ताको यह लोभावा,
उपजे तब ही ते घटवो कर, अंश सकल निरवाना।
याका अंश बढ़े नहिं कबहूँ, जिनवानी यो गावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिंग आवे।।61।।

ॐ ह्रीं श्री हीयमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यं।

उपजे जो भव में उर आवे, अवधिज्ञान सुखकारी,
आयु अन्त तक रहे साथ में, पीछे परभव लारी।
अनुगामी है नाम इसी का, अवधिज्ञान कहलावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातैं मो ढिंग आवे।।62।।

ॐ ह्रीं श्री अनुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यं।

अब जिस क्षेत्तर में उपजे उर, ज्ञान अवधि सुखदाई,
जिसकी थानक में थिति जाकी, और क्षेत्र नहिं जाई।
अवधिज्ञान यह अननुगामिनी, परभव संग न जावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिंग आवे।।63।।

ॐ ह्रीं श्री अननुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यं।

जितने अंशों में पैदा हो, उतना ही प्रिय भाई,
आयु अन्त लों तहाँ रहे थिर, घट बढ़ हो न कदाई।
ज्ञान अवधि यह जान अवस्थित, सम्यक् रूप लहावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिंग आवे।।64।।

ॐ ह्रीं श्री अवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यं।

अवधिज्ञान उपजे जबतें उर, कबहूँ घट बढ़ जाई,
अंश बढ़े कबहूँ बहु जानो, कबहूँ अंश घटाई।
यह अनवस्थित अवधिज्ञान है, सम्यक् जुत फल पावे,
तातैं मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिंग आवे।।65।।

ॐ ह्रीं श्री अनवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यं।

सरल भाव मन विकलप जाने कुटिलभाव नहिं जाने,
उत्तम सात आठ योजन भव, क्षेत्र काल की जाने।
ऋजुमति मनपर्यय यो जाने, मन चिन्तित प्रिय भाई,
पर मन के विकलप जो जाने, जाँहिं जजों सुखदाई।।66।।

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमतिमनःपर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

विपुलमती मनपर्यय ज्ञानी, पर के मन की पावे,
सरल गूढ जो मन के विकलप, सारे भेद लखावे।
क्षेत्र अढाई द्वीप काल भी, पल्य असंखो जानो,
ऐसे विकलप जानें पर मन, जाँहिं पूज्य सो जानो।।67।।

ॐ ह्रीं श्री विपुलमतिमनःपर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं।

तीन लोक निःसीम अलोक की, काल तीन की जाने,
जीव अजीव तत्त्व बरतेंगे, वर्ते बरतत जाने।
गुण पर्याय लसै सो सो तब, जो जो स्वांग बनाये,
इत्यादिक सब जाने केवल, ज्ञान जजों थुति लाये।।68।।

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानाय अर्घ्यं।

ऐसे मतिश्रुत अवधिज्ञान लखि, मनपर्यय सुखदाई,
केवलज्ञान अनादि अपारी, जानत खेद न पाई।
याविधि पाँचो ज्ञान सुसम्यक्, पूज्य कहे जिनवाणी,
तातैं अर्घ्य बनाय जजों ये, मोहि मिले सुखदानी।।69।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्पंचज्ञानाय पूर्णार्घ्यं।

।।जयमाला।।

दोहा –

दीखे ज्ञान थकी सकल, ज्ञानभानु सो जान।
मैं पूजों मन वचन तन, मो उर प्रकटो आन।।

चाल मुनियानन्दी

ज्ञान की आन सब लोक परमान जी,
ज्ञान ही कर्म को मूल तें ढाय जी।
ज्ञान पुण्य पाप की राह बतलाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 1।।
ज्ञान ही देय शिव स्वर्ग थानक मही,
ज्ञान तैं चक्रधर अर्धचक्री कही।
ज्ञान ही लोक में सर्व सुखदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 2।।
ज्ञान तैं कर्म अरि जीता जान है,
ज्ञान तैं आपने पाप जिय हान है।
ज्ञान ही लोक का गुरु हितदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 3।।

ज्ञान तें वृत्त तप ध्यान शुभ होय जी,
ज्ञान ही सकल उर भरम को खोय जी।
ज्ञान अधमैल को धोय सुध लाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है ।। 4।।
ज्ञान चक्षू भले गूढ़ अर्थ जानिये,
ता थकी भेद शुभ वा अशुभ जानिये।
ज्ञान – नद वारि तें पापमल जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है ।। 5।।
ज्ञान ही लोक का श्रेष्ठ रत्न जानिये,
ज्ञान ही धर्म सब जीवहित आनिये।
ज्ञान जग – कर्म वन नाश करवाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 6।।
ज्ञान तें लोकदु:ख जाय भय आन की,
ज्ञान तें मोक्षतिय वरत है जान जी।
ज्ञान रवि होय मिथ्यात्व तम जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 7।।
ज्ञानसम कर्मक्षयकर नहीं जानिये,
मोह मदहरन को भलो भट मानिये।
ज्ञान सों सकल उर दु:ख मिट जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 8।।
ज्ञान जग भेद सब जान भ्रम भान जी,
ज्ञान तें मिटें उर क्रोध छल मान जी।
ज्ञान उर होय तब धर्म मन भाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 9।।
ज्ञान मति भेद शत तीन छत्तीस जी,
ज्ञान श्रुत अंग पूर्व भेद सर्व ईश जी।
अवधि के भेद त्रय तथा बहु थाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 10।।
मनपर्यय ज्ञान के भेद दो जानिये,
ज्ञान शुद्ध केवला एकविध मानिये।
इन विषैं गुन घना भलो फलदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।। 11।।

दोहा – देवधर्म गुरुज्ञान तैं, पावे जिय शिवधाम।
तातैं मैं शुध ज्ञान को, मन वच करो प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय जयमालार्घ्यंम्।

।।इति सम्यग्ज्ञानपूजा समाप्तः।।

सम्यक्चारित्र पूजा प्रारम्भ

।। अडिल्ल छन्द।।

पंच महाव्रत सार समिति पाँचो सही,
गुप्ति तीन मिल तेरहविध जिनध्वनि कही।
यों ही शुभ चारित्र भवोदधि नाव है,
सो मैं पूजों थाप यहाँ कर चाव है।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

जोगीरासा की चाल

क्षीरसमान मनोज्ञ सुनिर्मल, त्रस जीवन बिन जानो,
उज्ज्वल क्षीरोदधि को जल ले, देखत उर हरषानो।
कनकझारि में धरकर लाया, भक्ति धार सुखदाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जलं।

बावन चन्दन अगर मिलायो, नीर सुसंग घिसायो,
ताकी गंध मत्त हो अलिगण, चउ – दिश से उड़ आयो।
ऐसा चन्दन गंधसहित जो, कनकपात्र धरि लाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय चन्दनं ।

अक्षत उज्ज्वल मुक्ताफल से, खण्ड बिना चुनवाये,
श्रेष्ठ सुगंधित विविध जाति के, जो मन अति हरषाये।
ऐसे अक्षत कनक थाल धरि, प्रचुरभक्ति उर लाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अक्षतं।

फूल मनोहर अति सुखदाई, नाना रंग के प्यारे,
गंध महा जिन माँहि घनी है, धार सुभग आकारे।
तिन फूलन की माला करि मैं, भक्ति घनी मन लाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय पुष्पं।

नानारस मिलवाय बनाये चरु अति ही सुखदाई,
मोदक आदि मनोहर जानो, ज्यों नैवेद्य सुगाई।
सो हम नीके पातर में धरि, विनयसहित पुनदाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नैवेद्यं।

दीपक रतन तने करि लीने, धनी ज्योति बहु धारी,
कनकथालभरि निजकर लायो, करन आरती भारी।
मन वच तन शुभ भावन से मैं भक्ति हिये बहु लाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय दीपं।

धूप भली वाहै तन वाहीं, तातें भगति पियारी,
नानागंध तिस माँहि मेलि के, कीनी अति सुखकारी।
देसे दशधा धूप हाथ ले, अग्नी माँहि जलाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय धूपं।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो,
और अनेक भले फल कर ले, आयो अति हरषानो।
नीके पात्र धार के तन मन, भावभक्ति सब लाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय फलं।

जल चन्दन अक्षतसुपहुप चरु, दीप धूप फल प्यारे,
मिला सर्व को अर्घ्य बनायो, सुन्दर पात्र पसारे।
अपने कर ले करों आरती, नानाविध गुण गाई,
पूजों सम्यक्चारित मन वच काय अंग सब नाई।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

प्रत्येकार्घ्यं।। चाल जोगीरासा।। (प्रत्येक के लिए अर्घ)

जिनआज्ञाजुतमुनि वच बोले, सुन सबजिय सुख पावें,
हिंसा वचन नहीं ऋषि भाखें, करुणा अति मन ल्यावें।
शुद्ध अहिंसाव्रत तब होवे, वच अपने यश राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई पूजों व्रत अभिलाखें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वचनाहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मन से हिंसाभाव निवारे, करुणाजुत मन धारी
महाविरत तब होय अहिंसा, मन राखें हितकारी।
मुनि किरपानिधि सबजग बंधू, मन तें दोष न भाखें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों करके व्रतअभिलाखें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मनोहिंसारहिताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

षट्कायिक जीवन पीड़ाहर, मारग देख सु चालें,
सूक्षम बादर सब पर करुणा, चार हाथ लखि हालें।
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, यह जिनवाणी भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।3।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहितायाहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

पिछीकमंडलु पुस्तक निजकर, जोवे धरे उठावें,
दयाभाव सब जीवन ऊपर, तातैं थावर की राखें।
महाविरत तब शुद्ध अहिंसा, त्रस थावर की राखें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें।।4।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपसमितियुताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जीवदया के हेतु महामुनि, दोष हटाकर खावें,
समतासागर सब जियबंधु, खान पान सुध पावें।
तबहिं अहिंसाव्रत की शुद्धी, होय इसी विधि राखें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें।।5।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

प्रथम महाव्रत जान अहिंसा, सो या विधि समझायो,
पाँच भावना ताकी ऐसी, इनसे शुद्ध बतायो।
यही अहिंसा महासुव्रत है, सब जीवन पत राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।6।।

ॐ ह्रीं पंचभावनायुताहिंसामहाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

क्रोधसहित वच असत कहा है, करे प्रतीति न कोई,
तातैं क्रोध बिना सच भाषे वचन महाशुभ होई।
ऐसा सत्य – महाव्रत धारी, जग गुरुराज सुभाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्रोधरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

लोभ तनै वश साँच न बोले, ना परतीति सुभाई,
लोभ बिना परमारथ भाषे, सत्य – वचन सुखदाई।
या विध सत्यमहाव्रत उत्तम, भवदधि परता राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री निर्लोभभावनायुत सत्यमहाव्रतसहित – सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भयजुत प्राणी साँच ने बोले, कहे झूठ उकसाई,
भय से भीत अन्यथा भाषे, यह निश्चय लखि भाई।
भीति बिना जो होय महाव्रत, सो जिय का सत राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।9।।

ॐ ह्रीं भयरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

हास्य विषैं वच साँच न जाने, हास्य सत्य को घाते,
हास्य तहाँ सतवन न उपजे, हास्य बिना सत पावे।
तातैं हास्य बिना जु महाव्रत, शुद्ध होय जिन भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।10।।

ॐ ह्रीं हास्यरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

वच शास्त्रानुकूल ही कहना, वच अनुवीचि प्रमानो,
शास्त्र विरुद्ध कहें नहिं कबहूँ, सत्य विरतधर मानो।
जो अनुवीचि वचन प्रिय होवे, सत्य महाव्रत भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।11।।

ॐ ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

पाँच भावना सत्यविरत की, पाल कहे सच वयना,
सत्य महाव्रत सहित भावना पाप हरे सुख झरना।
ऐसे सत्य–महाव्रत की सो, पल पल महिमा राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।12।।

ॐ ह्रीं पंचभावनायुताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

सूने घर में नाहीं जावे, जाने चोरी त्यागी,
भूमि परी विसरी पर वस्तु, लेय नहीं विनरागी।
सौ अचौर्य महाव्रतधर यति, भाव प्रतिज्ञा राखें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें।।13।।

ॐ ह्रीं शुन्यगृहप्रवेशरहिताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

ऊजड़गृह में वास करे तो, चोरी दूषण पावे,
तातैं छोड़े घर में माँही, मुनि नहिं ध्यान लगावे।।
व्रत अचौर्य यह जान महाव्रत, निज मन वश में राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।14।।

ॐ ह्रीं निर्जनगृहवासरहिताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

निजथल पर का आना रोके, सो चोरी अघ पावे,
व्रत अचौर्य में यातें यतिजन, औगुण मोटो लावे।।
शुद्ध अचौर्य महाव्रत जानो, सो यह दोष न राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।15।।

ॐ ह्रीं परोपरोधाकरणयुताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

दाता दे सो भोजन जे मुनि, आप न सेन बतावे,
देय इशारा भोजन जे तो, चोरीदूषण पावे।
दोष बिना लीये शुध भोजन, सो अचौर्यव्रत भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।16।।

ॐ ह्रीं भैक्ष्यशुद्धियुताचौर्यमहाव्रतयुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

आपस माहीं धर्मी जनसों विसम्वाद ना करही,
समता धार त्याग यह दूषण व्रत अचौर्य मन धरही।
धर्मी से गोवत्सप्रीतिसम प्रीति, किये सुख चाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई पूजों व्रत अभिलाखें।।17।।

ॐ ह्रीं सधर्माविसंवाददोषरहिताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

पंच भावना ऐसी इन जुत, व्रत अमल सु कहावे,
इन्हें भुलाये चोरि दोष हो, नाहिं निमित्त मिलावे।
दोष गये शुध होय अचोरी, महाविरत ध्वनि भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।18।।

ॐ ह्रीं पंचभावनायुताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

नारिकथा सुनके जो मन में, तिय अनुराग बढ़ावे,
ताको शील लहे दूषण को, या बिन शील रहावे।
रामाराग कथा से वर्जित, ब्रह्मचर्य शुभ भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।19।।

ॐ ह्रीं स्त्रीरागकथाश्रवणदोषरहिताचौर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

अतिसुन्दर नारी तन देखे, बार बार धरि रागा,
ताके शील सुरत्न विरत को, मोटो अवगुन लागा।।
ऐसे दोष बिना सुशील व्रत, भवदधि परता राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।20।।

ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांग निरीक्षण दोषरहितब्रह्मचर्य महाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

मुनिपद पहले राजसमय में, भोग किये थे भारी,
तिनकी याद किये ये दूषण, शील लहे दुखकारी।
पूर्वरतानुस्मरण रहित यो, शील महाव्रत राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वरतानुस्मरणरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भोजन नाहिं गरिष्ट करें मुनि, शील सुरक्षा काजे,
दधि घृत मेवादिक के खाये ब्रह्मचर्य व्रत लाजे।
तातैं ऐसा भोजन तजि के शील महाव्रत राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई पूजों व्रत अभिलाखें।।22।।

ॐ ह्रीं वृष्येष्टरसत्यागसहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

अपने तन के मज्जन चूरन ह्वन धोवना लावे,
ऐसी किरिया जो मुनि राखे शील दोष को पावे।
तातैं तन श्रृंगार रहित जो शील महाव्रत राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई पूजों व्रत अभिलाखें।।23।।

ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्काररहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

पंच भावना ऐसी पालें, शील करन शुध भावे,
ताको मुक्ति मनोहर रमणी, वेगहिं पास बुलावे।
ऐसा शील महाव्रत नीको, जो मुनि दृढ करि राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।24।।

ॐ ह्रीं पंचभावनायुतब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

कोमल कठिन चीकनो रूखो, लघु शीतोष्ण महानी,
ऐसे आठ विषय सों विरकत, परिग्रहत्याग सुजानो।
आतम के अनहित के कारण, तामें मन नहिं राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।25।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय शुभाशुभ विषयरहित परिग्रहत्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

खट्टा मीठा कडुआ जानो, अरु कषायला भाई,
और चरपरा पाँच विषय में, रसना बहु ललचाई।
ये रसना के भोग शुभाशुभ, भोग परिग्रह त्यागें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।26।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय शुभाशुभ विषयरहित परिग्रहत्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

नासा इन्द्रिय विषय शुभाशुभ भोग परिग्रह सोई,
गंध विषय ललचाय जीव ते, परिग्रही अतिमोही।
तातैं इनके त्यागि भये जे, परिग्रहत्यागी भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।27।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय शुभाशुभ विषयरहित परिग्रहत्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

नेत्र सुजानै लाल पीत वा, श्याम सब्ज अरु श्वेता,
तामें राग द्वेष उपजावे, परिग्रहो जनचेता।
इनिको त्याग सुत्याग परिग्रह, मन वच तन कर राखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई पूजों व्रत अभिलाखें।।28।।

ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रिय शुभाशुभ विषयरहित परिग्रहत्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

तीन शब्द हैं सचित अचित अरु, मिश्र शब्द सुखदाई,
इनमें राग अरु द्वेष करै मुनि, सोइ परिग्रह भाई।
तातैं इनके त्यागें परिग्रह, त्याग महाव्रत भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।29।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रिय शुभाशुभ विषयरहित परिग्रहत्याग महाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

पाँच भावना पंचम व्रत की, त्याग कहो इन माँहीं,
इन जुत परिग्रहत्याग महाव्रत, शुद्ध होत शक नाहीं।।
पाँच भावना सहित होय जो, महाव्रती मुनि भाखें,
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखें।।30।।

ॐ ह्रीं पंचभावनायुतपरिग्रहत्याग सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

।। अडिल्ल छन्द।।

चार हाथ भू शोध, पाँव मुनिवर धरें,
इत उत देखन त्याग, निज को वश करें।
सो शुभ ईर्यासमिति महा सुखदाय है,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।31।।

ॐ ह्रीं यत्रतत्रावलीलोकनदोषरहितैर्यासमितियुतसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जब मुनि करे विहार, दयानिधि तार जी,
चालै नहीं सुताव, बड़े पग धारजी।
ऐसो दोष निवार, समिति पग धार है,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।32।।

ॐ ह्रीं शीघ्रगमनदोषरहितैर्यासमितियुतसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

रागवचन सुन व्रती, राह चलते नहीं,
राग द्वेष कर चंचल, चित करते नहीं।
तातैं ईर्या समिति, शुद्ध सुखदाय है,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।33।।

ॐ ह्रीं पथिगमनकाले रागवचनश्रवणात्चित्तचांचल्यदोषरहितईर्या समितिसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

राह चलत वच दुष्ट, श्रवण करके सही,
द्वेष भाव करि करें, चित्त को चल नहीं।
तब शुभ ईर्या समिति, होय हितदाय है,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।34।।

ॐ ह्रीं मार्गगमनकाले दुष्टवचन श्रवण दोषरहित–ईर्या समिति सहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

राह चलत श्री मुनिवर, कबहुँ न यों करें,
पड़ी वस्तु पग कर तें, कबहु न लें धरैं।।
सो यह दोष निवार, समिति शुध लाय है,
जूना के परमान, भूमि दिखवाय है।।35।।

ॐ ह्रीं मार्गस्थवस्तुग्रहण दोष रहितैर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

सर्व दोष तें रहित, मुनी मग जाय है।
जूना के परमान, भूमि दिखवाय है।
ऐसी समिति दयालु, भाव कर लाय है,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहितैर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

जो जिस देश मँझार, वस्तु को नाम है,
सो ही कहना सत्य, वचन शुभधाम है।
जनपद सत् कथनीय, समिति सुखदाय है,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।37।।

ॐ ह्रीं जनपदसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

रौढ़िक जाका नाम, सकल जन यों कहें,
सोई कहना संवृति, सत सुधि में रहें।
ऐसी भी वच भाषा, समिति सु जानिये,
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों हित मानिये।।38।।

ॐ ह्रीं संवृतिसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

चित्र मनुज हय हाथी, वृष के कीजिए,
फिर तिनको नर पशु, नाम रख लीजिये।
यही थापना सत्य, समिति वच जानिये।।या.।।39।।

ॐ ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

जाको जग में नाम, प्रसिद्ध सु गाइये,
सोई कहना नाम, दोष नहिं पाइये।
नाम सत्य यह सार, समिति वच जानिये ।।या.।।40।।

ॐ ह्रीं नामसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

यह रंग काला पीला लाल हरा सही,
ऐसा कहना रूप सत्य भाषा सही।
ये ही भाषा सत्य वचन मन आनिये।।या.।।41।।

ॐ ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

यह पदारथ बड़ा यहै छोटा सही,
कहे अपेक्षा वचन घने परगट मही।
यही सत्य परतीति समिति वच जानिये,
या जुत सम्यग्वृत्त जजों हित मानिये।।42।।

ॐ ह्रीं प्रतीत्यसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

नैगमनय की रीति वचन सो भाषिये,
कर मन ठीक जु वस्तु हिये में राखिये।
सत है सो व्यवहार समिति वच आनिये,
या जुत सम्यग्वृत्त पूज्यतम मानिये।।43।।

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

शक्र विषैं बल ऐसा भू उल्टी करें,
भूमि जानि अनादि नाहिं कबहूँ टरें।
ऐसा कहना सम्भावित सत जानिये,
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी,।44।।

ॐ ह्रीं संभावनासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

मेरु असंखे द्वीप नरक सुर थल सही,
कंदमूल में जीव अनन्ते जिन कही।
भाव सत्य संजोय समिति वच जानिये, या.।45।।

ॐ ह्रीं भावसत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

का को किसकी उपमा देकर भाषिये,
ज्यों दानी सुरवृक्ष जगत में आँकिये।
सो उपमा सत जान समिति वच ठानिये, या.।46।।

ॐ ह्रीं उपमासत्यभाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

प्राण जाय तो जाय असत भाषें नहीं,
भाषें तो सच वैन जिसे जिन ध्वनि कही।
सो ही भाषा समिति भव्य उर आनिये, या.।।47।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

पात्रनिमित्त सु भोजन जो दाता पचे,
तो यह दोष 'उद्देशिक' दाता सिर रचे।
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी, या. ।।48।।

ॐ ह्रीं औद्देशिकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

पात्र जनों को देख रसोई जो करें,
दाता 'अध्यदि' दोष आपने सिर धरें।
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी,
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी, या.।।49।।

ॐ ह्रीं अध्यदिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

जो मुनि को दे भोजन, अचित्त मिलायकें,
'पूतिकर्म' यह दोष सुदातृ उपायकें, सो.।50।।

ॐ ह्रीं पूतिकर्मदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

मुनि को भोजन देय असंयमि साथ जी,
तो दाता के दोष मिश्र विख्यात जी।सो.।।51।।

ॐ ह्रीं मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

थानान्तर भोजन दे मुनि को लायकें,
तो 'स्थापित' ले दोष दातृ अधिकाय के।
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी,
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी।।52।।

ॐ ह्रीं स्थापितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

देव पितर को कियो मुनी को दे सही,
तो दाता 'बलि' दोष आप सिर जे लही। सो.।।53।।

ॐ ह्रीं बलिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

वेग वेग वा धीरे मुनि को आहार दे,
'प्रावर्तित' सु दोष दातृ निज शिर धरे।सो.।।54।।

ॐ ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

मुनि भोजन का थान प्रकाशित जो करे,
'प्राविष्करण' सु दोष दातृ निज शिर धरे ।सो.।।55।।

ॐ ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

विद्या-क्रीत अहार मुनी को दान दे,
'क्रीतदोष' तब दाता के ही शिर बँधे।
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी,
या जुत सम्यग्वृत्त जजों शिवदाय जी सो.।56।।

ॐ ह्रीं क्रीतदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

ऋण कर कृत आहार मुनी को दे सही,
सो दाता 'ऋण' दोष आप सिर ले कही।सो.।।57।।

ॐ ह्रीं प्रामृष्यदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

निजी अन्न बदलाय दान मुनि को करे,
'परिवर्तन' अघ सोय, दातृ सिर पर धरे सो भोजन सो. ।।58।।

ॐ ह्रीं परिवर्तनदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

अन्य ग्राम तें आय दान मुनि को करे,
'अभिघट' कहि अघ सोय आप सिर पर धरे।सो.।।59।।

ॐ ह्रीं अभिघटदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

बँधी वस्तु मुख खोल दान दे लाय जी,
'उद्भिन्न' अघ सिर दातृ लेय अति भाय जी।सो.।।60।।

ॐ ह्रीं उद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

ऊपर खण की वस्तु लाय मुनि दान दे,
'मालारोहण' नाम दातृ अध सिर सु ले।।सो.
सो भोजन मुनि तजें एषणा लाय जी,
या कृत सम्यग्वृत जों शिवदाय जी ।।61।।
ॐ ह्रीं मालारोहणदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
त्रास और भयकार दान मुनि को करे,
दोष 'अच्छेद्य' सुनाम आपने सिर धरे।।सो.।।62।।
ॐ ह्रीं अच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
जाको धनी न होय दान दे और जी,
'अनीशार्थ' अध दातृ लहे तिस ठौर जी।सो.।।63।।
ॐ ह्रीं अनीशार्थदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
षोडश दोष सुजान मुनी आहार में,
दाता पालें जान सोय बुध सार में।सो.।।64।।
ॐ ह्रीं षोडशोद्गमदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
जाय यती दाता के घर में, बालक नाहिं खिलावे,
नहिं श्रृंगारे नहिं पुचकारे, बालक को न रमावे।
'धात्री' दोष तजें मुनिवर यह समिति एषणा पालें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अध टालें।।66।।
ॐ ह्रीं धातृदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
दाता के घर जाय यतीश्वर इत उत बात बतावे,
देशान्तर की कहे वार्ता तो मुनि दोष बढ़ावे।
'दूत' दोष यह तजें महामुनि समिति एषणा पालें,।या.।।67।।
ॐ ह्रीं दूतदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
निमितज्ञान की बात कहे मुनि दाता को सुखदाई,
भोजन फेर गहे घर वाके तो सिर दोष चढ़ाई।
निमितदोष ऋषिराज तजें यह समिति एषणा पालें,।या.।।68।।
ॐ ह्रीं निमित्तदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
दाता के घर जाके मुनिवर कह प्रभुता की बातें,
इस विधि से सुन्दरतम भोजन कबहुँ यतीजन पाते।
यह 'आजीवक' दोष तजें यति समिति एषणा पालें,।या.।।68।।
ॐ ह्रीं आजीवकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।
जो मुनि दाता को सुसुहावन बात कहे घर जाई,
भोजन ताके आप करे, ऋषि तो अध लेय उपाई।।
दोष 'वनीपक' तजि मुनि याकी समिति एषणा पालें।या.।।69।।
ॐ ह्रीं वनीपकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

जो मुनि दाता के घर जाकर औषधि भेद बतावे,
नाड़ी देख सुरोग बतावे फिर भोजन को खावे।
दोष 'चिकित्सा' होय त्याग के समिति एषणा पालें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले।।70।।

ॐ ह्रीं चिकित्सादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

जो मुनि भोजन लेय क्रोधयुत दाता के घर जाई,
तो मुनि के शिर दोष चढ़त है सो भोजन दुखदाई।
'क्रोध' दोष यह तजे मुनीश्वर समिति एषणा पालें,।या.।।71।।

ॐ ह्रीं क्रोधदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

हम तपसी दीरधकुल धारी ज्ञान धरें अधिकाई,
यों कह भोजन ले दाता घर मानसहित हो भाई।
'मानदोष' यह तज के मुनिवर समिति एषणा पालें,।या.।72।।

ॐ ह्रीं मानदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भोजन को मुनि जाय नगर में दाता के घर जाई,
भोजन लेय कपट कर चित में नाना छल दिखलाई।
'माया दोष' तजें इसको मुनि समिति एषणा पालें,।या.।।73।।

ॐ ह्रीं मायादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

लोभविवश हो दाता के घर ले भोजन यति जाई,
स्वादलम्पटी रसना पीड्यो तो शिर दोष चढ़ाई।
'लोभ' दोषको तजके यतिवर समिति एषणा पालें।या.।।74।।

ॐ ह्रीं लोभदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भोजन पहले दाता की थुति जो मुनिराज उचारें,
तो अपने तप संयम माहीं दूषण ही निरधारें।।
पूरवथुति अध को तज के यों समिति एषणा पालें।या.।।75।।

ॐ ह्रीं पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भोजन दाता के घर ले मुनि पीछे यह विधि लावें,
दाता की थुति करके भारी आप दोष लिपटावें।
पीछे थुति यह दोष त्याग मुनि समिति एषणा पालें, ।या.।76।।

ॐ ह्रीं पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

मुनि भोजन ले जिस दाता घर ता प्रसन्नता काजे,
अपनी विद्याएँ दिखलाके दोष आपको साजे।
विद्यादोष त्याग यह मुनिवर समिति एषणा पालें,।या.।।77।।

ॐ ह्रीं विद्यादोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

मन्त्र तन्त्र जंत्रादिक अतिशय चमत्कार बतलावें,
पीछे भोजन ले दाता घर तो सिर दोष बँधावें।
मन्त्र दोष यह तज के योगी समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले।।78।।

ॐ ह्रीं मन्त्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

जो मुनि काजल नेत्रनि को दे चूरण आदि बतावें,
यों कर भोजन लें दाता घर तो सिर दोष बँधावें।
'चूरन' अघ को छोड़ महामुनि समिति एषणा पालें,या ।।79।।

ॐ ह्रीं चूर्णदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

वशीकरण आदिक की युक्ति गृहियों को दिखलावें,
पीछे से मुनि भोजन लेवें तो संजम मल पावें।।
'मूलकर्म' दूषण तज के यह समिति एषणा पालें।या.।।80।।

ॐ ह्रीं मूलकर्मदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भोजन भक्ष्य अभक्ष्य किसो है या शंका करि खावें,
तो मुनि अपने संजम में यों शंकित दोष लगावें।
ऐसी 'शंकित' दोष त्याग मुनि समिति एषणा पालें।या.।।81।।

ॐ ह्रीं शंकितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

दाता के कर चिकने होवें चिकने वासन जोवें,
तामें भोजन जो मुनि लेवें तो सदोष वे होवें।
मृक्षितदोष तजें यह मुनिवर समिति एषणा पालें।या.।।82।।

ॐ ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

सचित वस्तु पर रक्खा भोजन मुनिवर कबहुँ न खावें,
अपने संजम भार लाभ या सावधान चित लावें।
यह निक्षिप्त दोष तजिके मुनि समिति एषणा पालें,।या.।।83।।

ॐ ह्रीं मृक्षितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

भोजन ढाँकें सचित वस्तु सों तो यति नाहीं खावें,
ऐसो कारण आय मिले तो भोजन ही तज जावें।।
'पिहित' दोष को छोड़ यतीश्वर समिति एषणा पालें,।या.।।84।।

ॐ ह्रीं पिहितदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

पूरव नेक थकी भोजन लें तो मुनि दूषण पावें,
मोह वचन मुखते आलापे सो संयम खो जावें।
अहारदोष यह त्याग यतीश्वर, समिति एषणा पालें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टालें।।85।।

ॐ ह्रीं आहारदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

सूतक रोगी वृद्ध बाल जो जलती अग्नि बुझावें,
गर्भवती तिय होय नपुंसक इनि कर मुनि नहिं खावें।
दायकदोष तजें मुनिनायक समिति एषणा पालें,या.।।86।।

ॐ ह्रीं दायकदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्रायार्घ्यं।

आँचल सों बालक तज नारी जो मुनि को पड़गाहे,
तो याके कर को भोजन ऋषि आय कबहूँ नहिं खाये।
'सम्व्यवहरणदोष' तजिके मुनि समिति एषणा पालें,या.।।87

ॐ ह्रीं सम्व्यवहरणदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

वस्तु सचित्त अचित्त मिली जो भोजन में मुनि खावें,
तो उसके अति दूषण लागे जग में निन्दा पावें।।
मिश्रदोष यह तजे मुनीश्वर समिति एषणा पालें,या.।।88।।

ॐ ह्रीं उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जली और अधपक्की चीजें वा अप्रासुक लाई,
भोजन में यतिवर को देवें तो लेवें न कदाई।।
दोष अपरिणत को मुनि त्यागें समिति एषणा पालें,या.।।89।।

ॐ ह्रीं अपरिणतदोषरहितैषणासमितिसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

पात्र खड़ी हड़ताल गेरु से यदि लिपटा हो भाई,
भाजी खिचड़ी खड़ी आदि या लिपटी देय दिखाई।।
'लिप्तदोष' माने सत साधू समिति एषणा पालें,या.।।90।।

ॐ ह्रीं लिप्तदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

वस्तु हाथ से द्रवित होय जो या प्रदत्त तज खावें,
तो मुनिनायक अपने संयत माहीं दोष लगावें।।
त्यजनदोष यह तजके मुनिवर समिति एषणा पालें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टालें।।91।।

ॐ ह्रीं परित्यजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

उष्ण माँहिं शीतल शीतल में उष्ण मिला कर खावें,
तो अपनो सत संजम नीको ताके दोष लगावें।
दोष संयोजन नाम त्याग गुरु समिति एषणा पालें, या.।।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अध टालें।।92।।

ॐ ह्रीं संयोजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

बत्तिस ग्रास मुनी का भोजन सो ही उत्तम होई,
तासें अधिक न मुनिवर खावें आज्ञा–भंग न सोई।
अप्रमाण इस अध को छोड़ें समिति एषणा पालें, या.।।93।।

ॐ ह्रीं अप्रमाणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मीठो भोजन रुचि से खावें दाता को जु सरावें,
बहु आसक्त होय भोजन ले सो सिर दोष मढावें।
दोष अंगार तजें गुरु याको समिति एषणा पालें, या.।।94।।

ॐ ह्रीं अंगारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जो भोजन मन चाहत नाहीं खावत अरुचि कराहें,
दाता की निन्दा फिर ठानें तो निज संजम दाहें।
धूमदोष याको मुनि त्यागें समिति एषणा पालें, यों.।।95।।

ॐ ह्रीं धूमदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

ऐसे तेइस दुगुन मल, टालत हैं मुनिराय।
तब भोजन करते सही, ते गुरु जजों सहाय।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मुनि के भोजन करते नभ से काक बीट कर जावे,
देखे, मुनि तो भोजन छोड़े हिये खेद ना पावे।।
काकदोष यह तजें यतीश्वर समिति एषणा पालें,या.।।97।।

ॐ ह्रीं काकान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

अपने पग जो अशुभ वस्तु से लिपटे होय कदाई,
देखे मुनि तो भोजन छोड़े अन्तराय गिन भाई।
दोष अशौच्य तजे मुनि याको समिति एषणा पालें, या.।।98।।

ॐ ह्रीं अशौच्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जो मुनि भोजन को मग जाते करता वमन निहारें,
तो तादिन आहार तजे यह अन्तराय सु विचारे।
छदि दोष को तजके मुनिवर समिति एषणा पालें, या.।।99।।

ॐ ह्रीं छर्द्यन्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

रूदन करते परको देखे भोजन – बेला कोई,
अन्तराय तो होय मुनी को भोजन करे न सोई।
'रुदनदोष' यह तजे महामुनि समिति एषणा पालें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टाले।।100।।

ॐ ह्रीं रुदनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

निज पर का मुनि लोहू देखें भोजन बेला कोई,
अन्तराय तो लहें सुगुरुवर समताधर जित सोई।।
'रुधिरदोष' यह तजें मुनीश्वर समिति एषणा पालें, या.।101।।

ॐ ह्रीं रूधिरदोषहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

अश्रुपात निज – पर के देखे भुक्तिकाल मुनिराई,
अन्तराय तो गिने जगद्गुरु करुणासागर भाई।।
अश्रुपातदूषण यह तज के समिति एषणा पालें, या.।।102।।

ॐ ह्रीं अश्रुपातान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन हेतु पात्र को जंघा ऊपर गेहि चढ़ावें,
तो मुनिनाथ तजें भोजन को अन जल पिये न खावैं।
'जंघानाम' दोष तजके यति समिति एषणा पालें, या.।।103।।

ॐ ह्रीं जंघास्पर्शान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

साधु हाथ यदि घुटने नीचे का स्पर्श लहावें,
अन्तराय तो माने यतिवर भोजन–गृद्धि हटावे।
तज 'प्राव्रत्यदोष' को निश्चय समिति एषणा पालें, या.।।104।।

ॐ ह्रीं प्रावृत्यान्तारायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

नाभीतल शिर नीचा करके द्वार निकाल बुलावे,
अन्तराय तो माने यतिवर आगमविधि को ध्यावे।
'नाभ्यधोनिर्गमन' दोष तजि समिति एषणा पालें,
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अघ टालें।।105।।

ॐ ह्रीं नाभ्यधोनिर्गमनांतरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

तजी वस्तु भोजन में आई निश्चय में जब जाने,
अन्तराय माने सत्साधु आकुलता नहिं आनें।
'प्रत्याख्यान' जु दोष तजे यह समिति एषणा पालें, या.।।106।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानान्तरायदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जीवघात निज पर कर सेती भोजन–बेला होई,
तो मुनि देख तजे भोजन को दयाभाव धर सोई।
'जन्तूवधदूषण' तज के मुनि समिति एषणा पालें, या.।।107।।

ॐ ह्रीं जन्तुवधान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते हाथों में से काक ग्रास ले जावे,
तो मुनिनाथ तजें भोजन को ता दिन फेरि न खावें।
काकपिण्ड यह दोष तजें मुनि समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मेरे अध टालें।।108।।

ॐ ह्रीं काकपिंडान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते ग्रास पड़े भू दातृ पात्र कर सेती,
तो मुनि जीमन नाहिं करे फिर है मर्यादा येती।
पाणिपात्र जियघात दोष तज समिति एषणा पालें, या.।।109।।

ॐ ह्रीं पाणिपात्रजीवजन्तुघातान्तरायदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन बेला आमिष देखे तो भोजन गुरु छोड़ें,
तन विरक्त संयम के लोभी भुक्ति – राग ना माँडें।
आमिषदर्शन दोष त्याग के समिति एषणा पालें।।110।।

ॐ ह्रीं आमिषदर्शनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन बेला जगद्गुरु को होय उपद्रव आई,
अन्तराय मानें जीमन में समता भाव समाई।
दोषोपसर्ग त्याग के मुनिवर समिति एषणा पालें, या.।।111।।

ॐ ह्रीं उपसर्गान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते पगों बीच से पञ्चेन्द्रिय निकसावें,
तो आहार न लेवें गुरुवर संयम नाहिं गमावें।।
'पादान्तरजियगमन' दोष तजि समिति एषणा पालें, या.।।112।।

ॐ ह्रीं पादान्तरजीवगमनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते दाता कर से पात्र यदी गिर जावे,
तो आहार न लेवें गुरुवर संयम नाहिं गमावें।
'पात्रसम्पतन' दोष त्याग के समिति एषणा पालें, या.।।113।।

ॐ ह्रीं भोजनपात्रसम्पतनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते अपने तन से मुनि जो मल निकसावें,
तो आहार तजें गुरु ज्ञानी जिन आज्ञा उर ध्यावें।।
दोष उचार त्याग वृष लोभी समिति एषणा पालें, या.।।114।।

ॐ ह्रीं उच्चारत्यागान्तररायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते अपने तन से निकले मूत्र अजानें,
तो आहार तजें गुरु ज्ञानी जिन धुनि रहस पिछानें।
'दोष प्रसार' त्याग के मुनिवर समिति एषणा पालें, या.।।116।।
या जुत सम्यक्चारित पूजों सो मरे अघ टालें।।117।।

ॐ ह्रीं प्रसारान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन हेतु भूल से यदि मुनि शूद्रों के घर जावें,
तजें गुरु जीमन को तिस दिन अनशन ही वे लावें।
दोष 'अभोजनगृह' प्रवेश तज समिति एषणा पालें, या.।।117।।

ॐ ह्रीं अभोजनगृहान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मूर्छा खाय गिरे यति अथवा पर को मूर्छित देखे,
भवसागर के तीर गये यति भोजन भक्ष्य न लेखे।
'पतनदोष' को त्याग मुनीश्वर समिति एषणा पालें, या.।।118।।

ॐ ह्रीं पतनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करते कर्मयोग भू बैठ जाय मुनिराजा।
अन्तराय मानें भोजन में वास करें हित काजा।।
'उपवेशन' यह दोष त्याग गुरु समिति एषणा पालें, या.।।17।।

ॐ ह्रीं उपवेशनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

कूकर आदिक हिंसक प्राणी दंश करत यति जोवें,
अन्तराय मानें गुरुनायक कायर चित्त न होवें।।
'स्वानदंश' यह दोष त्याग के समिति एषणा पालें, या.।।118।।

ॐ ह्रीं स्वानदंशान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन बेला सिद्ध भक्ति को कर मुनि शीश नमावें,
कर से यदि भूमि छू जावे अन्तराय तब ध्यावें।
'भूमिस्पर्श' दोष तज करके समिति एषणा पालें, या.।।119।।

ॐ ह्रीं भूमिस्पर्शान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन बिरियाँ अपना परका यदि खकार लख लेई,
अन्तराय माने गुरु ज्ञानी जिनवाणी जिन लेई।
'निष्ठीवन' यह दोष छोड़ मुनि समिति एषणा पालें, या.।।120।।

ॐ ह्रीं निष्ठीवनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन काल निजोदर से यदि कृमि निकली यति जानें,
अन्तराय भोजन में मानें खेद नहीं उर आनें।
'उदरकृमीनिर्गमन' दोष तज समिति एषणा पालें, या.।।121।।

ॐ ह्रीं उदरकृमीनिर्गमनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

दाता के बिन दीने भोजन मुनि चाहे मनमांहीं,
अंगीकार करें तन मन से तो शिर दोष बढ़ाहीं।
दोष 'प्रदत्तग्रहण' तजके मुनि समिति एषणा पालें, या.
या जुत सम्यक्चारित पूजों जो मेरे अध टालें।।122।।

ॐ ह्रीं अदत्तान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन बेला यति वा पर पै, वार करे यदि कोई,
तो मुनि ता दिन अनशन धारें कर्म विजय हित सोई।।
दोष 'प्रहार' तजें मुनिनायक समिति एषणा पालें, या.।।123।।

ॐ ह्रीं प्रहारान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन को जाते यदि पुर में अग्नि लगी हो भाई,
अन्तराय तो गिनें यतीश्वर भोजन नाहिं कराई
'ग्रामदाह' यह दोष त्याग के समिति एषणा पालें, या. ।।124।।

ॐ ह्रीं ग्रामदाहान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मार्ग पड़ी पग अड़ी वस्तु जो ले मुनिराज उठाई,
तो उनके वर संयम माँहीं दोष लगे अधिकाई।
'पादग्रहण' यह दोष हरण कर समिति एषणा पालें, या.।।125।।

ॐ ह्रीं पादग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

राह पड़ी जो वस्तु आप कर ले मुनिराज उठाई,
अन्तराय तो गिनैं जैन गुरु लोभ धरें न कदाई।।
'करग्रहण' यह दोष त्याग के समिति एषणा पालें, या.।।126।।

ॐ ह्रीं करग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

ऐसे बत्तिस अन्तराय को भोजन कालिक पालें,
तो मुनि संयम पालें अपने गुणलोभी अध टालें।
समिति एषणा ताके शुध हो स्वर्ग मोक्ष सुखदाई, या.।।127।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदन्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन में नख निकले सोय, अन्तराय तो गुरु को होय,
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारितपूज्य सुमान।।128।।

ॐ ह्रीं नखमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

केश नीसरे भोजन माँय, अन्तराय तो यती मनाय।स.।129।।

ॐ ह्रीं केशमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मृत प्राणी भोजन में जोय, तो मुनि भोजन छोड़े सोय। स.।।130।।

ॐ ह्रीं मृतजीवदर्शनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन समय अस्थि यदि जोय, तो यति भोजन त्यागे सोय.।।131।।
ॐ ह्रीं कीकस दर्शनमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जीमत राध नजर जो आय, तो योगी आहार न पाय।स.।।132।।
ॐ ह्रीं राधमलरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन करत चर्म दिखलाय, तो योगी आहार न पाय।स.।।133।।
ॐ ह्रीं चर्मदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जीमत यदी रुधिर अवलोय, तो आहार तजें यति सोय।स.।।134।।
ॐ ह्रीं रुधिरदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन बेला आमिष जोय, तो मुनि भोजन नाहीं सोय।स.।।135।।
ॐ ह्रीं आमिषदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन में यदि कणा दिखाय तो मुनि भोजन नाँहीं खाय।
समिति एषणा तब शुध जान या जुत चारित पूज्य सुमान।।136।।
ॐ ह्रीं कणदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

जीमत तिल के अंश दिखाय तो मुनिवर आहार न पाँय।स.।।137।।
ॐ ह्रीं तिलकणादर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

भोजन में यदि बीज दिखाय तो भोजन नाँहीं यति खाय।स.।।138।।
ॐ ह्रीं बीजदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

साबित फल भोजन में आय ऋषि अनशन धारे हरषाय।स.।।139।।
ॐ ह्रीं साबित फलदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

कन्द वस्तु भोजन में आय अन्तराय माने मुनिराय।स.।।140।।
ॐ ह्रीं कंदमूलदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

वस्तु देख के यती उठाय समिति एषणा शुद्धि कराय।स.।।141।।
ॐ ह्रीं आदानसमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मुनि जो वस्तु भूमि में धरें, तो जियरक्षा में चित धरें।
निक्षेपणसमिती चितलाय, याजुत चरित जजों सुखदाय।।142।।
ॐ ह्रीं निक्षेपणसमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

तनमल जहँ भू क्षेपे यती भू शुद्धी देखें शुभमती।
यहव्युत्सर्गसमिति मनलाय या जुत चारित पूज्यसुभाय।।143।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मनविकल्प जिनध्वनिसम करें, और ठौर नाँहीं मन धरें।
मनोगुप्ति धारें मुनिराय, या जुत वृत्त जजों सतभाय।।144।।
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

मुनिवच जिन आज्ञा सम होय, तातैं पाप लगे ना कोय।
वचनगुप्ति पालें मुनिराय, याजुत वृत्त जजों सतमाय।।145।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

तनको मुनि वश राखें सोय, बिना प्रयोजन चलना होय।
कायगुप्ति सो जानो सही, या जुत वृत्त जजों शुभ मही।।146।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

पाँच महाव्रत समिति जु पाँच, तीन गुप्ति मिलचारित साँच।
यों तेरहविध चारित जान, पूजों मन वच अर्घ्य सुआन।।147।।

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकारसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं।

।।जयमाला।।

दोहा – सम्यकचारित मोक्ष को, कारण और न कोय।
पापपन्थ तज सर्व ही, चारित की विधि जोय।।

।।बेसरी छन्द।।

सम्यक्चारित भवदधि नावा, सिद्धक्षेत्र धरि देन स्वभावा।
परिग्रह धारि लहे ना याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
मोहराय जीतन को जावे, जो चारित्र कवच तन लावे।
ध्यावत हैं सुर नर खग याकों, मैं पूजों मनवचतन ताकों।।
सत्यक्चारित्र मोक्ष निशाना या बिन होय न कर्मन हाना।
या बिन मोक्ष न होवे काकों ,मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारितग्रहण वीर का कामा, कायर पै न सधे गुणधामा।
निर्मोही धारत है याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
शंकासहित जीव बलहीना, ते कहँ धार सकें यह दीना।
महापुरुष धारत हैं याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
कामीजन तो देखत लज्जें, शीलवान धर्मी जन सज्जें।
चारित उपमा दीजे काकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारित को चक्रीधर चाहें, सुर खग इन्द्र भावना भाहें।
निकटभव्य धारत है याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारित चरम शरीरी धारें, चारित से कर्मारि बिदारें।
कामदेव से धारत याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारित नाम सुनत हरषावें, सो जिय चारित महिमा पावें।
चारित धारत है धनि वाकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।

यह चारित पीड़ाहर भाई, धारक शक्रविभव को पाई।
शिववांछक सेवत हैं याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारित सर्व हितू लखि भाई, चारित सर्वोत्तम सुखदाई।
मुनिजन पूजत ध्यावत याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारित को हम भी ललचावें, क्या जाने किस भव में पावें।
इस भव करत भावना याकों, मैं पूजों मन वच तन ताकों।।
चारित का शरणा जिन पाया, तानें निजभव सफल बनाया।
शक्तिप्रद हितकर गिन याकों, मैं पूजत मन वच तन याकों।।

दोहा – सुर नर पूजत ताहिं को, जो चारित्र लहाय।
सो चारित महिमा अतुल, नमों सदा शिर नाय।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय जयमालाये महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा – सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित लेहु मिलाय।
मोक्षमार्ग ये तीन ही, मैं पूजों शिर नाय।।

।।चौपाई।।

रत्नत्रय शिवमारग जान, या बिन मोक्षमार्ग ना आन।
ये ही शिवदायक मन लाय, मोकों भवहर होय सहाय।। 1।।

चाल मुनियानन्दी की

भुवन त्रय मुकुट शुभ, रतन त्रय जानिये।
तीन जग जीव थुति, करें हित मानिये।।
तीस फल पापमल, धोय निज शुध करें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरैं।।2।।
तीन जग भ्रम्यो बिन, रतनत्रय पाप जी,
मिली नहिं सेवकी, कहूँ सुखदाय जी।
अब शुभ दिन भयो, भक्ति इनकी करें,
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें।।
चक्रि नरराज से, रतनत्रय काज जी,
तजें सब जगत सुख, दाय बहुराज जी।
छोडि सब परिग्रह, वास वन में करें।। मैं.।।
बिना रतनत्रयी, तीर्थकर देव जी,
सिद्ध पद ना लहें, करे बहुसेव जी।

तास ते रतन त्रय, एक शिवफल करे।।मैं.।।
भये रतन त्रय पाय, देव गणधर सही,
रतनत्रय लाभ तैं पदवी मुनि की लही।
सकल सुख देय कर, रतनत्रय अघ हरे।।मैं.।।
रतनत्रय तीर्थसम, जगत में सार जी,
रतनत्रय देय भव तार अविकार जी।
रतनत्रय गुरु हम, पाय तप को करें।।मैं।।
रतनत्रय धर्म सब, हरे सब कर्म जी,
रतनत्रय ज्योति तैं, मिटे बहु भर्म जी।
रतनत्रय रूप लखि, मुकतिनार वर करें।।।मैं.।
रतनत्रय छत्रतां, शिर फिरे आय जी,
जीव सो जगत तजि, मुक्तिराज पाय जी।
रतनत्रय लक्ष्मि की, चाह हरि सुर करें।।मैं।।
रतनत्रय रवि सदृश, रागतम नाशि है,
रतनत्रय नेत्र तैं, तत्व सुप्रकाश है।
रतनत्रय मुकुट शिव, नार बल्लभ करें।।मैं.।।
रतनत्रय राह को, नग्न जावे सही,
किन्तु जो परिग्रही, तास निभतो नहीं।।
रतनत्रय देहि भजि, आपसम जो करे,
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित करें।।मैं.।।
रतनत्रय एक जग, माँहि है सार जी,
कीजिये कहा कहों, और निरधार जी।
रतनत्रय नाव भव अब्धि पार भी करे।।मैं।।
विरत यह रतनत्रय, करे धन्य सोय जी,
या थकी फेर ना, जन्म मृत्यु होय जी।
विरत यह रतनत्रय, मोक्ष दे हित करे।।मैं।।
करो भवि रतनत्रय, विरत मम लाय जी,
समय यह कठिनकर, मिलो शुभ आयजी।
मनुषतन उच्चकुल, याहि सो ही करें।।मैं.।।
विरत की विधी यों, आर्ष बतलाय जी,
वासत्रय आदि अन्त, एक भुक्ति पाय जी।
रीति उत्कृष्ट सों, भव्य मन में धरें।।मैं.।।

होय ना शक्ति उत–कृष्ट की तो सुनो,
आदि जुगमान इक, पारणा दिन गुनो।
नाँहिं मध्य शक्ति अन्त, आदि अनशन करें।।मैं।।
होय अल्पशक्ति तो, वह करे येम जी,
मध्य इक वास अन्त, पारना जीम जी।
वासना शक्ति तो, अल्प भोजन करें।।मैं।।
विरत ऐसे करे, वर्ष तेरह सही,
तथा वर्ष नौ त्रय, विरत कर ध्वनि कही।
अन्त उद्यापना, या दुगुन व्रत करे।।मैं.।।
शक्तिसम द्रव्य ले, फेरि जिन पूजिये,
दीजिये दान पर – भावना कीजिये।
और घनी विधि जिन, वानि लखि के धरें।।मैं।।
विरत ऐसे किये, कर्म अरि को हरें,
भव्य व्रत धार यों, भावना मन धरें।
रत्नत्रय विरत को, सेव शिवसुख करें।।मैं.।।

दोहा – रत्नत्रय की सेव कर, रत्नत्रय गुण गाय।
रत्नत्रय की भावना, कर पल–पल शिर नाय।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जयमालाये अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्रभ्यो नमः
(1108 बार इस मंत्र का जाप करें।)

।।इति रत्नत्रयविधानं समाप्तम्।।

श्री भाषा रत्नत्रय व्रतकथा

(श्री कविवर ब्रह्मज्ञानकृत)

दोहा – अरहनाथ को वन्दि के, वन्दों सरस्वति माय।
रत्नत्रय व्रत की कथा, कहूँ सुनो मन लाय।।

।।चौपाई।।

जम्बूद्वीप भरत शुभ खेत, मगधदेश सुख सम्पति हेत।
राजगृही तँह नगरि बसाय, राजा श्रेणिक राज कराय।।
विपुलाचल जिनवीर कुमार, केवलज्ञान विराजित सार।
माली आय जनावो देय, ततछिन राजा गमन करेय।।
पूजा वन्दन कर शुभ सार, लाग्यो पूछन प्रश्न विचार।

हे स्वामी रत्नत्रय सार, व्रत कहिये जैसा व्यवहार।।
दिव्यध्वनि भगवान् बताय, भादों सुदि त्रयोदशि शुभभाय।
कर स्नान स्वच्छ पटश्वेत, पहिनी मन–वच–तन जिन हेत।।
आठों द्रव्य लेय सु बनाय, पूजों जिनवर मन–वच–काय।
जीरण नूतन जिनके गेह, बिम्ब धरावा तिनमें देह।।
भर्म रौप्य पीतल के यन्त्र, ताँबा तथा भोज के पत्र।
यन्त्र करावहु मन थिर देव, रत्नत्रय के गुण लिख लेव।।
निःशंकादि सद्गुण सार, संशयरहित सुज्ञान अपार।
अहिंसादि महाव्रत सार, चारित के ये गुण हैं सार।।
ये तीनों के गुण हैं आदि, इन्हें आदि जेते गुण वादि।
शिवमारग के साधन हेत, ये गुण धारें व्रती सुचेत।।
भादों माघ चैत में जान, तीनों काल करो भवि आन।
या विधि तेरह वरष प्रमान, भावन भावे गुणहि निधान।
लवंगादि अष्टोत्तर आन, जपो मन्त्र मन कर श्रद्धान।
पुनि उद्यापन विधि जो येह, कलशा चमर छत्र शुभ देह।।
संघ चतुर्विध को आहार, वस्त्राभरण देहु सुखसार।
बिम्बप्रतिष्ठा आदि अपार, पूजो श्रीजिन हो भवतार।।

दोहा – इस विधि श्रीमुख धर्म सुख, भन्यो चित्तधर भाय।
जाने फल पायो प्रभु, सो भाखों समुझाय।।

।।चौपाई।।

जम्बू दीप अलंकृत हेर, रह्यो ताहि लवणोदधि घेर।
मेरु सु दक्षिण दिश है सार, है विदेह तह वृष अवतार।।
कच्छवती तह रम्य सुदेश, वीतशोकपुर तहाँ सुवेश।
'वेस्रिव' नाम तहाँ को राय, करे राज सुरपतिसम भाय।।
माली ने जू जनावो दयो, विपुलबुद्धि प्रभु वन में ठयो।
इतनी सुन नृप वन्दन गयो, दान बहुत माला को दयो।।
हे स्वामी रत्नत्रय धर्म, मोसों कहो मिटै सब भर्म।
तब स्वामी ने सब विधि कही, जो पहले सुप्रकाशी सही।।
जिनवर को अभिषेक रुठ्यो, फिर पूजा करके सुख लयो।
जागरणादि कियो बहुभाय, इसविधि व्रतकर वैस्रिवराय।।
भावसहित राजा व्रत करयो, धर्म प्रतीति चित्त अनुसरयो।

षोडश भावन भावत भयो अन्त समाधिमरण तिन किया।।
गोत्र तीर्थकर बाँध्यो सार, जो त्रिभुवन में पूज्य अपार।
सर्वारथसिधि पहुँच्यो जाय, भयो तहाँ अहमिन्द्र सुभाय।।
हस्तमात्र तन ऊँचो भयो, तेतिस सागर आयुष लयो।
दिव्यरूप सुख को भण्डार, सत्यनिरूपण अवधि विचार।।
सौधर्मेन्द्र विचारो धरी, यक्षेश्वर को आज्ञा करी।
वेग नगरि निर्माप्यो जाय, थाप्यो सुथरापुर अधिकाय।।
तहाँ कुम्भधर नृपती बसे, देवी प्रजावती तिस लसे।
श्री आदिक तहँ देवी आय, गर्भसोधना कीनी जाय।।
रत्नवृष्टि नृप आँगन भई, पन्द्रह मास सुवर्षत गई।
क्षरवारथ सिधि सों सुर आय, प्रजावती कुक्षी उपजाय।।
मल्लिनाथ शुभ नाम जु पाय, दोज चन्द्रसम बढ़त सुभाय।
जब विवाह मंगल विधि भई, तब विरागता प्रभुचित लई।।
दीक्षा धर वन में प्रभु गये, घातिकर्म हनि निर्मल ठये।
केवल ले निर्वाण सु जाय, पूजा रची सुरन तब आय।।
यह विधान श्रेणिक ने सुन्यो, व्रत लीने चित अपने गुन्यो।
भक्ति विनय कर उत्तम गाय, पहुँचे अपने गृह को आय।।
या विधि जो नर नारी करे, सो भवसागर निश्चय तरे।
नलिनकीर्तिमुनि संस्कृत कही 'ब्रह्मज्ञान' भाषा निर्मयी।।

।।कविवर श्री ब्रह्मज्ञान कृत रत्नत्रय कथा समाप्तः।।

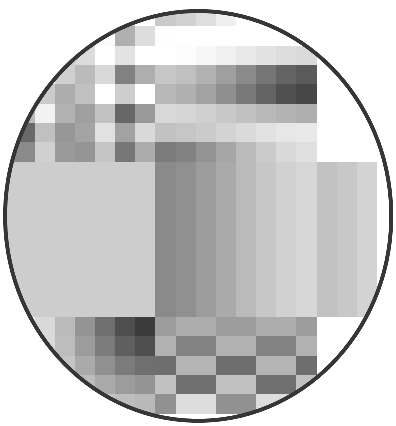

भजन

जीवन है पानी की बूँद के रचयिता व प्रवर्तक – आचार्य विनम्रसागर

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे – ऽऽऽ
होनी अनहोनी हो – हो–2, कब क्या घट जाये रे – ऽऽ
जीवन है पानी ....

जितना भी कर जाओगे, उतना ही तुम पाओगे–2
किये बिना कुछ नहिं मिलता–ऽऽऽ
अपना–अपना करना है–करनी का फल भरना है–2
नीम के तरु पे–हो–3 – नहीं आम दिखायें रे–ऽऽ ।।
जीवन है पानी ....

कर्म किया नहिं है अच्छा, धर्म न मिल पाया सच्चा–2
कैसे जीवन गुलशन हो–ऽऽऽ
वीराने इस जंगल में–रहें न इक पल मंगल में–2
गम का यहाँ पर हो–3 हम बोझ उठायें रे–ऽऽ
जीवन है पानी ....

पल की हमको खबर नहीं, पीते रहते जहर यहीं–2
कैसे हम जी पायेंगे–ऽऽऽ
ललक न जागी जीवन की, खिली न किस्मत चेतन की–2
कैसे यहाँ पर – हो –3, हम ज्ञान बढाएँ रे–ऽऽ
जीवन है पानी ....

सोचा तुमने कभी नहीं, धोखा तुमने दिया यहीं–2
कैसे ईश्वर पाओगे–ऽऽऽ
दगा – सगा नहीं होता है–दगा – दाग नहिं धोता है–2
जीवन में आकर हो–3 क्यूँ पाप कमाये रे – ऽऽ
जीवन है पानी ....

चंद दिनों का जीवन है–इसमें देखो सुख कम है–2
गम ही गम नजराता है–ऽऽऽ
जन्म सभी को है मालूम, मृत्यु किसी को नहिं मालूम–2
जाने कब तन से हो –3, पंछी उड़ जाये रे – ऽऽ।
जीवन है पानी ....